आदर्श अनुवाद शिक्षा

(हाई क्लासों के लिए)

—:o:—

(नई पाठ्य-प्रणाली के अनुसार)

लेखकः—

रत्न चन्द्र शर्मा,

एम० ए०, एम० ओ० एल०,

शास्त्री, प्रभाकर ।

प्रकाशक

देस राज गुप्ता एण्ड ब्रदर्ज़,

गुरदासपुर

१९५०

प्रथमावृत्ति २०००] —*:*— [मूल्य १-८-०

हांडा इलैक्ट्रिक प्रेस, जालन्धर नगर में ला० केशवचन्द हांडा के प्रबन्ध से मुद्रित हुआ और ला० देसराज जी मालिक फर्म मैसर्ज़ देसराज गुप्ता एण्ड ब्रादर्स ने गुरदासपुर से प्रकाशित किया ।

* ॐ *

॥ आदर्श-अनुवाद शिक्षा ॥

प्रथमः पाठः

भ्वादिगण* (परस्मैपद)

वर्तमान काल (Present Tense) लट् लकार।

पठ् = पढ़ना

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	पठति (वह पढ़ता है)	पठतः (वे दो पढ़ते हैं)	पठन्ति (वे सब पढ़ते हैं)
मध्यमपुरुष	पठसि (तू पढ़ता है)	पठथः (तुम दो पढ़ते हो)	पठथ (तुम सब पढ़ते हो)
उत्तमपुरुष	पठामि (मैं पढ़ता हूं)	पठावः (हम दो पढ़ते हैं)	पठामः (हम सब पढ़ते हैं)

निम्नलिखित भ्वादिगण के धातुओं का उच्चारण भी पठ् धातु के समान ही किया जाता है :—

भू (भव्)	होना	भवति	वस	रहना	वसति
गम् (गच्छ)	जाना	गच्छति	धाव्	दौड़ना	धावति
वद्	बोलना	वदति	यज्	यज्ञ करना	यजति
क्रीड्	खेलना	क्रीडति	दा (यच्छ्)	देना	यच्छति

---

*भ्वादिगण के धातु और प्रत्यय के बीच 'अ' विकरण जोड़ा जाता है। जैसे पठ्+अ+ति=पठति।

हस्	हंसना	हसति	दह्	जलाना	दहति
रक्ष्	रक्षा करना	रक्षति	नी (नय्)	ले जाना	नयति
स्था (तिष्ठ्)	ठहरना	तिष्ठति	पत्	गिरना	पतति
स्मृ (स्मर्)	याद करना	स्मरति	दृश् (पश्य्)	देखना	पश्यति
नम्	झुकना या नमस्कार करना	नमति	पच्	पकाना	पचति
खाद्	खाना	खादति	त्यज्	छोड़ना	त्यजति
जि (जय्)	जीतना	जयति	चल्	चलना	चलति

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

वह रक्षा करता है। मैं हंसता हूँ। वे दो चलते हैं। हम सब देखते हैं। तुम सब जलाते हो। हम सब दौड़ते हैं। तू देता है। मैं पकाता हूँ। तुम सब छोड़ते हो। तुम दो पढ़ते हो। वे सब जीतते हैं। मैं गिरता हूं। तू जाता है। वे सब हंसते हैं। वे सब खेलते हैं। हम दो खाते हैं। मैं नमस्कार करता हूँ। तुम सब झुकते हो। हम सब जीतते हैं। तुम दो खेलते हो। वह बोलता है। मैं ले जाता हूँ। हम सब यज्ञ करते हैं। हम दो याद करते हैं। वे सब जाते हैं।

द्वितीयः पाठः

अजन्त पुँल्लिङ्ग

अकारान्त नर शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्त्यर्थ
प्रथमा	नरः	नरौ	नराः	ने, ×
द्वितीया	नरम्	"	नरान्	को
तृतीया	नरेण	नराभ्याम्	नरैः	से (जरिया), के साथ, द्वारा
चतुर्थी	नराय	"	नरेभ्यः	के लिये
पञ्चमी	नरात्	"	"	से जुदाई
षष्ठी	नरस्य	नरयोः	†नराणाम्	का, के, की
सप्तमी	नरे	"	नरेषु	में, पर, ऊपर
संबोधन	हे नर	हे नरौ	हे नराः	दूर से बुलाने में प्रयुक्त होता है

---

†ऋ, र और ष से परे न को ण हो जाता है। यदि ऋ, र, ष और न के बीच कोई स्वर (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ) अथवा कवर्ग या पवर्ग के दसों वर्णों में से कोई वर्ण आ जावे तो भी न को ण हो जाता है। जैसे 'नरेण' और 'नराणाम्' में न को ण हो गया है। परन्तु पदान्त न् को ण् नहीं होता जैसे— 'नरान्' यहां पदान्त न् को ण् नहीं हुआ।

उदाहरण

१. दो आदमी पढ़ते हैं।	१. नरौ पठतः।
२. सब आदमी जाते हैं।	२. नराः गच्छन्ति।
३. राम घोड़े से गिरता है।	३. रामः अश्वात् पतति।
४. मोहन डण्डे से सांप को मारता है।	४. मोहनः दण्डेन सर्पं हन्ति।
५. वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।	५. वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
६. वृक्ष का बीज फूटता है।	६. वृक्षस्य बीजं स्फुटति।

शब्द कोष

ग्राम	गांव	मार्ग	रास्ता	अनिल	पवन
कोष	खज़ाना	स्तेन	चोर	अनल	अग्नि
जनक	पिता	पर्वत	पहाड़	मूर्ख	बेवकूफ
बालक	लड़का	गज	हाथी	वायस	कौआ
वृक्ष	दरखत	कर,हस्त	हाथ	मार्जार	बिल्ला
प्रसाद	कृपा	मेघ	बादल	अध्यापक	शिक्षक
छात्र	विद्यार्थी	व्याध	शिकारी	काल	समय
पुत्र	बेटा	सिंह	शेर	सूर्य	सूरज
अश्व	घोड़ा	नृप	राजा	ग्रीष्म	गर्मी का मौसम
कासार	तालाब	दास	नौकर	मूषक	चूहा

ऊपर लिखे समस्त अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों का उच्चारण नर शब्द के समान होगा।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

मोहन हंसता है। बालक गेन्द[१] से खेलता है। राम पाठ (को) याद करता है। राजा ब्राह्मणों के लिये धन देता है। आग वृक्ष को जलाती है। तालाब में नौका तैरती[२] है। राजा नगर की रक्षा करता है[३]। पर्वत से पत्थर[४] गिरते हैं। धनी वस्त्रों से शरीर को सजाते हैं। बादल जल बरसाते हैं[५]। ईश्वर की कृपा से लोग जीते हैं। पिता पुत्र को उपदेश देता है[६]। घोड़ा रास्ते में दौड़ता है। मोहन का पिता देवताओं की पूजा करता है। गरमियों में सूर्य का प्रकाश तेज[७] होता है। सब छात्र आचार्य को प्रणाम करते हैं। बालक फूलों को छूते हैं। संसार में सुख और दुःख बारी बारी[८] से आते हैं।

सङ्केत :— (१) कन्दुकेन (२) तरति (३) नगरं रक्षति (४) पाषाणाः (५) वर्षन्ति (६) उपदिशति (७) चण्डः (८) क्रमशः।

तृतीयः पाठः

कुछ आवश्यक शब्द

निम्नलिखित शब्दों को स्मरण रखना चाहियेः—

सः	वह (पुरुष)	त्वम्	तू	तव	तेरा
सा	वह (स्त्री)	कथम्	कैसे	मम	मेरा
तत्	वह (नपुंसक)	कः	कौन	*सह	साथ
अयम्	यह	न	नहीं	अत्र	यहां
अहम्	मैं	किम्	क्या या कुछ	तत्र	वहां
अपि	भी	सर्वदा	सदा	कुत्र	कहां

उदाहरणः—

१. देव वहां जाता है।	१. देवः तत्र गच्छति।
२. बालक यहां आता है।	२. बालः अत्र आगच्छति।
३. वन में एक शेर रहता है।	३. वने एकः सिंहः वसति।
४. वह आश्रम में रहता है।	४. सः आश्रमे निवसति।
५. तू क्या करता है।	५. त्वं किं करोषि।

---

*सह शब्द के साथ सदैव तृतीया विभाक्ति आती है। जैसे "राम के साथ" का "रामेण सह" अनुवाद होगा।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

मोहन वन में एक मृग को देखता है। वह लीडर के पास[1] जाया करता है। तुम्हारा मित्र कहां रहता है? वे आश्रम में बालकों को देखती है। लक्ष्मण राम के साथ बन को जाता है। मैं सत्य बोलता हूँ। तुम्हारा उस के साथ क्या सम्बंध है। तुम कहां पढ़ते हो। मेरा और तुम्हारा क्या सम्बन्ध? तुम राम को क्या कहते हो? तू नहीं जानता। यह घड़ा[2] सब कुछ देता है।

संकेत :— (१) नेतुः पार्श्वे। (२) घटः।

चतुर्थः पाठः

अजन्त पुंलिङ्ग (Continued)

इकारान्त और उकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

	मुनि=मुनि			साधु=साधु		
	एक०	द्वि०	बहु	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	मुनिः	मुनी	मुनयः	साधुः	साधू	साधवः
द्वि०	मुनिम्	,,	मुनीन्	साधुम्	,,	साधून्
तृ०	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
च०	मुनये	,,	मुनिभ्यः	साधवे	,,	साधुभ्यः
प०	मुनेः	,,	,,	साधोः	,,	,,
ष०	,,	मुन्योः	मुनीनाम्	,,	साध्वोः	साधूनाम्
स०	मुनौ	,,	मुनिषु	साधौ	,,	साधुषु
सम्बो०	हे मुने	हे मुनी	हे मुनयः	हे साधो	हे साधू	हे साधवः

निम्नलिखित इकारान्त शब्दों के उच्चारण भी मुनिशब्द के समान होंगेः—

कवि	काव्य कर्ता	अलि	भंवरा	अतिथि	अभ्यागत
पाणि	हाथ	नृपति	राजा	यति	सन्यासी
व्याधि	रोग	विधि	भाग्य	निधि	खजाना
कपि	बन्दर	मणि	रत्न	अधिपति	स्वामी, राजा
अरि	शत्रु	गिरि	पर्वत	रवि	सूर्य
असि	तलवार	जलधि	समुद्र	अग्नि	आग

नीचे लिखे शब्दों का उच्चारण साधु शब्द के समान होगाः—

इन्दु	चान्द	इषु	तीर	शिशु	बच्चा
बाहु	भुजा	पशु	जानवर	रिपु	शत्रु
प्रभु	स्वामी	विष्णु	भगवान विष्णु	अंशु	किरण
भानु	सूर्य	हेतु	कारण	बिन्दु	कतरा, बून्द
ऋतु	मौसम	लघु	छोटा	विधु	चन्द

इकारान्त सखि और पति शब्दों का उच्चारण निम्नलिखित रीति से होगा :—

	*सखि – मित्र			†पति – स्वामी		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	सखा	सखायौ	सखायः	पतिः	पती	पतयः
द्वि०	सखायम्	,,	सखीन्	पतिम्	,,	पतीन्
तृ०	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
च०	सख्ये	,,	सखिभ्यः	पत्ये	,,	पतिभ्यः
प०	सख्युः	,,	,,	पत्युः	,,	,,

*समस्त 'सखि' शब्द के इकार को अकार हो जाता है और उस के रूप 'नर' शब्द के समान ही बनते हैं। जैसे कृष्णसखः, कृष्णसखौ इत्यादि।

†समस्त 'पति' शब्द के रूप 'मुनि' शब्द के समान बनते हैं।

ष०	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
स०	सख्यौ	,,	सखिषु	पत्यौ	,,	पतिषु
संबो०	हे सखे	हे सखायौ	हे सखायः	हे पते	हे पती	हे पतयः

उदाहरणः—

१– अर्जुन का मित्र कृष्ण बोलता है।	१– अर्जुनस्य सखा कृष्णः वदति ॥
२– सीता अपने पति के साथ बन को जाती है।	२– सीता निज पत्या सह वनं गच्छति ॥
३– ऋषि लोग वनों में रहते हैं।	३– ऋषयः बनेषु वसन्ति ॥
४– साधु लोग घरों में नहीं रहते।	४– साधवः गृहेषु न वसन्ति ॥
५– आकाश से जल की बून्दें गिरती हैं।	५– आकाशात् जलस्य बिन्दवः पतन्ति ॥
६– मोहन के मित्र का नाम गोपालदास है।	६– मोहनस्य सख्युर्नाम गोपालदासोऽस्ति ॥

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :-

मित्रों में मेरा विश्वास है। बच्चे आसनों पर बैठते हैं[१]। बन में ऋषि रहते हैं। अर्जुन हरि के साथ युद्ध पर जाता है। इन्द्र नारद मुनि को बुलाता है[२]। गरमी की ऋतु में भानु का प्रकाश तेज होता है। बन्दर वृक्षों पर चढ़ते हैं। कवि

हाथ से लिखता है। हम आंखों से देखते हैं। समुद्र में बहुत जल होता है। कमलों पर भंवरे गूंजते हैं[3]। राजा के सेवक नगर में घूमते हैं[4]। विष्णु संसार की रक्षा करता है। पशु घास ख हैं। छोटा सा भी फोड़ा[5] कष्ट देता है।

संकेत :— (१) निषीदन्ति। (२) आह्वयति। (३) गुंजन्ति (४) अटन्ति। (५) स्फोटः।

पंचमः पाठः

भ्वादिगण – आत्मनेपद – लट् लकार

सेव – सेवा करना

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	सेवते (वह सेवा करता है)	सेवेते (वे दो सेवा करते हैं)	सेवन्ते (वे सब सेवा करते हैं)
मध्यमपुरुष	सेवसे (तू सेवा करता है)	सेवेथे (तुम दो सेवा करते हो)	सेवध्वे (तुम सब सेवा करते हो)
उत्तमपुरुष	सेवे (मैं सेवा करता हूं)	सेवावहे (हम दो सेवा करते हैं)	सेवामहे (हम सब सेवा करते है)

धातु कोष

लभ्	पाना	लभते ।	स्पर्ध्	स्पर्धा करना	स्पर्धते ।
सह्	सहना	सहते ।	श्लाघ्	बढ़ाई करना	श्लाघते ।
वृत्(वर्त्)	होना	वर्तते ।	वेप्	काम्पना	वेपते ।
वृध(वर्ध्)	बढ़ना	बर्धते ।	चेष्ट्	यत्न करना	चेष्टते ।
कम्प्	कांपना	कम्पते ।	प्रकाश्	चमकना	प्रकाशते ।
वन्द्	नमस्कार करना	वन्दते ।	भाष्	बोलना	भाषते ।
यत्	यत्न करना	यतते ।	शङ्क्	शङ्का करना	शङ्कते ।

उदाहरण :—

१– सेवक स्वामी की सेवा करता है ।	१– भृत्यः प्रभुम् सेवते ॥
२– व्यायाम से आयु बढ़ती है ।	२– व्यायामेन आयुः वर्धते ॥
३– वह अपने परिश्रम का फल पाता है ।	३– स निज परिश्रमस्य फलं लभते॥
४– धीर पुरुष दुःख को सुख से सहते हैं ।	४– धीराः दुःखम् सुखेन सहन्ते ॥
५– वहां भी एक वटवृक्ष है ।	५– तत्र अपि एको वटवृक्षो वर्तते ॥

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

बूढ़े आदमी बहुत कष्ट सहन करते हैं। चोर धनी का धन हरता है। पिता पुत्र को सदाचार की शिक्षा देता है[१]। वह दुःख से चिल्लाता है[२]। पर्वतों की चोटियों पर बरफ[३] शोभा देती है। बच्चों के खेल मन को लुभाते हैं[४]। हम दोनों ईश्वर की भक्ति करते हैं। सूर्य आकाश में चमकता है। तू मोहन से पढ़ने में स्पर्धा करता है। मूर्ख व्यर्थ ही अपनी बड़ाई[५] करते हैं। छात्र गुरु को नमस्कार करते हैं। वृक्षों के पत्ते हवा से काम्पते हैं। तारे आकाश में दिन के समय नहीं चमकते। तेज़ हवा से भी पर्वत नहीं काम्पते। जो बालक परिश्रम से पढ़ते हैं वे शोभा पाते हैं। शत्रुओं के पराजय से नेतापति प्रसन्न होते हैं[६]। राम विश्वामित्र से शस्त्र सीखता है। दुष्ट पुरुष मित्रों से भी शंका करता है।

संकेतः— (१) शिक्षति (२) आक्रन्दति (३) हिमम् (४) हरन्ति (५) विकत्थन्ते (६) प्रसीदन्ति ।

षष्ठः पाठः

अजन्त पुँल्लिंग शब्द (Contd)

ऋकारान्त और ओकारान्त शब्द ।

	धातृ=ब्रह्मा			गो=बैल		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	धाता	धातारौ	धातारः	गौः	गावौ	गावः
द्वि०	धातारम्	,,	धातॄन्	गाम्	,,	गाः
तृ०	धात्रा	धातृभ्याम्	धातृभिः	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
च०	धात्रे	,,	धातृभ्यः	गवे	,,	गोभ्यः
प०	धातुः	,,	,,	गोः	,,	,,
ष०	,,	धात्रोः	धातॄणाम्	,,	गवोः	गवाम्
स०	धातरि	,,	धातृषु	गवि	,,	गोषु
सम्बो०	हे धातः	हे धातारौ	हे धातरः	हे गौः	हे गावौ	हे गावः

शब्द कोष

नेतृ	नेता	रक्षितृ	रक्षा करने वाला	भर्तृ	स्वामी
दातृ	दान देने वाला, दाता	वक्तृ	बोलने वाला	नप्तृ	दोहता
जामातृ	दामाद	सवितृ	सूर्य	कर्तृ	करने वाला
हन्तृ	मारने वाला	द्रष्टृ	देखने वाला	द्वेष्टृ	द्वेष करने वाला
गन्तृ	जाने वाला	विजेतृ	जीतने वाला		

पितृ — पिता

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	,,	पितॄन्

शेष धातृ शब्द के समान।

भ्रातृ शब्द का उच्चारण भी पितृशब्द के समान ही होता है।

उदाहरण :—

१– राजा लोगमनुष्यों की रक्षा करने वाले होते हैं।	१– नृपाः मनुष्याणां रक्षितारो भवन्ति ॥
२– दाता की सब लोग प्रशंसा करते हैं।	२– दातारं सर्वे जनाः प्रशंसन्ति ॥
३– नेता लोग बहुत दुःखों को भोगते हैं।	३– नेतारो बहूनि दुःखान्यनुभवन्ति
४– अध्यापक अपने दोहते से कहता है।	४– अध्यापकों निज नप्तारं भाषते ॥
५– सेवक स्वामी के पीछे चलते हैं।	५– भृत्याः भर्तारमनुगच्छन्ति ॥

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

चरवाहा गौ के पीछे जाता है। दान करने वाले सदा आदर पाते हैं। सज्जनों से मेरा समागम होता है। चंचल[१] बन्दर

वृक्ष से नीचे गिरते हैं। आलसियों का यत्न निष्फल होता है। मेरे भाई के साथ अतिथि आते हैं। सोहन हरि के घर पढ़ता है। जवाहर लाल और सरदार पटेल भारत के दो मुख्य नेता हैं। भोजन का स्वाद तीक्ष्ण है। जवाहर लाल हमारे देश का प्रधान मन्त्री है। संसार को बनाने वाला ईश्वर है। इस बालक को मारने वाला कौन है? ईश्वर जिसका रक्षक हो उसको मारने वाला कोई नहीं है। पिता कन्या को दामाद के साथ भेजता है[२]। देखने वाले ही शिमले की सुन्दरता को जानते हैं[३]। बालक बोलने वाले के लिये शीतल जल लाता है। मैं पति से पढ़ती हूँ। रावी नदी[४] पर एक सुन्दर पुल है। समुद्र को पानी का खजाना कहते हैं। सूरज की किरणें सब रोगों को नाश करती हैं[५]। अभ्यास से मूर्ख भी चतुर हो जाते हैं। दाता के दान की सब प्रशंसा करते हैं। संसार के बनाने वाले ईश्वर को भक्त लोग नमस्कार करते हैं। बूढ़ा अपने दोहते से प्यार करता है। गौओं से संसार का कल्याण होता है।

संकेतः— (१) चपलाः (२) प्रेषयति (३) जानन्ति (४) इरावती (५) नाशयन्ति।

सप्तमः पाठः

भ्वादिगण लङ् लकार * (Past tense)

पठ् – पढ़ना (परस्मैपद)

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
	(उस ने पढ़ा)	(उन दो ने पढ़ा)	(उन सब ने पढ़ा)
म०	अपठः	अपठतम्	अपठत
	(तू ने पढ़ा)	(तुम दो ने पढ़ा)	(तुम सब ने पढ़ा)
उ०	अपठम्	अपठाव	अपठाम
	(मैं ने पढ़ा)	(हम दो ने पढ़ा)	(हम सब ने पढ़ा)

सेव् – सेवा करना (आत्मनेपद)

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
	(उस ने सेवा की)	(उन दो ने सेवा की)	(उन सब ने सेवा की)
म०	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
	(तू ने सेवा की)	(तुम दो ने सेवा की)	(तुम सब ने सेवा की)
उ०	असेवे	असेवावहि	असेवामहि
	(मैं ने सेवा की)	(हम दो ने सेवा की)	(हम सब ने सेवा की)

*लङ्लकार में धातु से पूर्व "अ" जोड़ा जाता

धातु कोष

परस्मैपद			आत्मनेपद		
घ्रा (जिघ्र्)	सूंघना	अजिघ्रत्	मुद् (मोद्)	प्रसन्न होना	अमोदत
बुध् (बोध्)	जानना	अबोधत्	शिक्ष	शिक्षा पाना	अशिक्षत
हृ (हर्)	छीनना	अहरत्	ईक्ष्	देखना	ऐक्षत
*ह्वे (ह्वय्)	बुलाना	आह्वयत्	ईह्	चेष्टा करना	ऐहत
श्रि (श्रय्)	आश्रय लेना	अश्रयत्	सह्	सहना	असहत

अस् = होना (अदादिगण)

लट् लकार (Present Tense)				लङ् लकार (Past Tense)		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	अस्ति	स्तः	सन्ति	प्र० आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म०	असि	स्थः	स्थ	म० आसीः	आस्तम्	आस्त
उ०	अस्मि	स्वः	स्मः	उ० आसम्	आस्व	आस्म

कृ = करना (तनादिगण)

लट् लकार (Present Tense)				लङ् लकार (Past Tense)		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म०	करोषि	कुरुथः	कुरुथ	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ०	करोमि	कुर्वः	कुर्मः	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

नोट— लट् लकार की क्रिया के आगे 'स्म' जोड़ देने से भी भूतकाल का अर्थ प्रकट हो जाता है।

जैसे— वह जाता था = स गच्छति स्म इत्यादि।

---

* ह्वे धातु से पूर्व 'आ' प्रायः लगता है।

उदाहरण :—

१. जो तू ने कहा वही मैं ने किया ।	१. यत्त्वमवदस्तदेवाहम् अकरवम् ॥
२. बालक बाग में खेलते थे ।	२. बालकाः उपवने क्रीडन्ति स्म ॥
३. जब मैं वहां गया तो वह वहां ही था ।	३. यदाहं तत्रागच्छम् तदा स तत्रैवासीत् ॥
४. ऋषि लोग सदा सत्य बोलते थे ।	४. ऋषयः सदैव सत्यमवदन् ॥
५. हम ने वहां एक रीछ देखा ।	५. वयं तत्रैकं भल्लूकमपश्याम ॥

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

मैं ने मोहन को पढ़ते देखा। साधु बोला कि संसार का यही मार्ग है। सब स्वार्थ के लिये यत्न करते हैं। राजा दलीप ने एक सौ यज्ञ किये। सारा संसार ईश्वर का ही बनाया हुआ है। ये सारे सूर्य, चांद, ग्रह और नक्षत्र भी उसी ने बनाये हैं। आंधी से कल[1] सब वृक्ष गिर गये। महर्षि विश्वामित्र ने राम को शस्त्र-विद्या सिखाई। हम ने बाग में फूलों को सूंघा[2]। तुम ने वहां क्या किया? पांडवों ने श्री कृष्ण का सहारा लिया। थोड़ी देर में ही[3] वह सिंह के पास जा पहुँचा। गांव वालों

ने[४] उस निर्धन को सब कुछ दिया। महात्मा गान्धी ने संसार का बहुत उपकार किया[५]। अंत में राजकुमार सिद्धार्थ 'बुद्ध' इस नाम से प्रसिद्ध हुआ। सब बालक खेलने के लिये बाग में गये। शिवा जी ने नीति से[६] सारे शत्रुओं को जीता। श्री कृष्ण ने युद्ध में अर्जुन को उपदेश दिया। पार्वती ने शिव के लिये कई क्लेश सहे। वह राजा के भय से नगर को भाग गया। राम ने रावण को एक ही तीर से[७] मार दिया।

संकेतः— (१) ह्यः। (२) अजिग्राम। (३) शीघ्रमेव। (४) ग्रामीणाः (५) उपाकरोत्। (६) नीत्या। (७) शरेण।

अष्टमः पाठः

(अजन्त स्त्रीलिंग)

आकारान्त लता शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	लता	लते	लताः
द्वि०	लताम्	"	"
तृ०	लतया	लताभ्याम्	लताभिः

च०	लतायै	”	लताभ्यः
प०	लतायाः	”	”
ष०	”	लतयोः	लतानाम्
स०	लतायाम्	”	लतासु
सम्बो०	हे लते	हे लते	हे लताः

शब्द-कोष

प्रमदा, ललना	युवती स्त्री	प्रज्ञा	बुद्धि	विद्या	विद्या
		शोभा	सुन्दरता	सूचना	खबर
लता	बेल	भिक्षा	भीख	मूर्खता	बेवकूफी
माला	माला	लज्जा	शर्म	शाखा	डाली
कन्या	लड़की	छाया	साया	पाठशाला	स्कूल
कथा	कहानी	रमा	लक्ष्मी	प्रिया	प्यारी
व्यथा	पीड़ा	भार्या	पत्नी	कला	हुनर
निशा	रात	शिला	पत्थर	क्रीड़ा	खेल
निद्रा	नींद	बाला	लड़की	चिन्ता	फ़िकर

उदाहरण :—

१. कन्याएं पाठशाला को गईं।	१. कन्याः पाठशालामगच्छन् ॥
२. विद्या से मनुष्यों की शोभा होती है	२. विद्यया मनुष्याणां शोभा भवति ॥

३. शकुंतला ने पानी से वृक्षों को सींचा ।	३. शकुंतला जलेन वृक्षान् असिंचत् ॥
४. क्षमा यतियों का आभूषण है ।	४. क्षमा यतीनामाभूषणमस्ति ॥
५. मैं राम की कथा पढ़ता हूँ ।	५. अहं रामस्य कथां पठामि ॥

दिवादिगण *

दीव् = खेलना या प्रकाशित होना

परस्मैपद

लट् लकार (Present Tense)	एक०	द्वि०	बहु०	लङ् लकार (Past Tense) एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
म०	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उ०	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

जन् = उत्पन्न होना

(आत्मनेपद)

लट् लकार (Present Tense)	एक०	द्वि०	बहु०	लङ् लकार (Past Tense) एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	जायते	जायेते	जायन्ते	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
म०	जायसे	जायेथे	जायध्वे	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उ०	जाये	जायावहे	जायामहे	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

*दिवादिगण के धातुओं के रूपों में धातु और प्रत्यय के बीच 'य' विकरण जोड़ा जाता है ।

धातु-कोष

परस्मैपद			आत्मनेपद		
नृत्	नाचना	नृत्यति, अनृत्यत्	युध्	युद्ध करना	युध्यते, अयुध्यत
क्रुध्	क्रोध करना	क्रुध्यति, अक्रुध्यत्	विद्	होना	विद्यते, अविद्यत
शुष्	सूखना	शुष्यति, अशुष्यत्	मन्	मानना	मन्यते, अमन्यत
नश्	नष्ट होना	नश्यति, अनश्यत्	बुध्	जानना	बुध्यते, अबुध्यत
भ्राम्	घूमना	भ्राम्यति, अभ्राम्यत्	डी†	उड़ना	डीयते, अडीयत
पुष्	पालना	पुष्यति, अपुष्यत्			

उदाहरण :—

१. सेनाएं शस्त्रों से युद्ध करती हैं।	१. सेनाः शस्त्रैः युध्यन्ते ॥
२. लोभी मनुष्य संसार में कष्ट पाते हैं।	२. लोलुपाः संसारे क्लिश्यन्ते ॥
३. पानी से शरीर शुद्ध होता है।	३. जलेन शरीरं शुध्यति ॥
४. बड़ा भाई छोटे भाई पर कुपित हुआ।	४. अग्रजोऽनुजाय अकुप्यत् ॥

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

विच्छू[1] ने सोई हुई[2] कन्या को काटा[3]। बूढ़े आदमी ने बहुत कष्ट सहन किया। निद्रा से कई रोग नाश होते हैं।

---

†'डी' धातु से पूर्व प्रायः 'उत्' उपसर्ग जोड़ा जाता है। जैसे 'पक्षी आकाश में उड़ता है'' का अनुवाद "विहगः आकाशे उड्डीयते" किया जाता है।

अभिलाषा का संसार में कभी अंत नहीं होता। स्त्री का भूषण लज्जा है। पीड़ा से बच्चा चिल्लाता है[४]। गरमी के मौसम में स्त्रियां गले में फूलों की मालाएं पहनाती हैं[५]। पिता कन्या के लिये भूषण देता है। तपस्या से मन शुद्ध होता है। लोग कुम्भ के समय गङ्गा में स्नान करते है। शिलाओं पर कभी कमल नहीं उगते। बुढ़ापे से[६] शरीर का बल नष्ट होता है। गङ्गा और यमुना प्रयाग में मिलती हैं। माता ने कन्या पर क्रोध किया। विद्या से मनुष्य सुख पाता है। राम की भार्या सीता थी। गोविन्द का मित्र पाठशाला में पढ़ता था। यति लोग दुष्टों पर भी दया करते हैं। सिर की पीड़ा से दुःख होता है। राम की कथा से लोगों में धम का प्रचार होता है। गलियों में[७] लड़के खेलते हैं। चिन्ता से मनुष्य का शरीर सूख जाता है। राजा की आज्ञा से सेना युद्ध के लिये गई। अब तो मनुष्य भी आकाश में उड़ते हैं[८]। यत्न से ही विद्या मिलती है[९]।

संकेतः— (१) वृश्चकः। (२) शयानाम्। (३) अदशन्। (४) आक्रन्दते। (५) धारयन्ति। (६) जरया। (७) रथ्यासु। (८) उड्डयन्ते (९) लभ्यते।

———

नवमः पाठः

अजन्त स्त्री लिंग (Contd)

मति = बुद्धि	एक०	द्वि०	बहु०	नदी = नदी एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	मतिः	मती	मतयः	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वि०	मतिम्	”	मतीः	नदीम्	”	नदीः
तृ०	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च०	मत्यै, मतये	”	मतिभ्यः	नद्यै	”	नदीभ्यः
प०	मत्याः, मतेः	”	”	नद्याः	”	”
ष०	”, ”	मत्योः	मतीनाम्	”	नद्योः	नदीनाम्
स०	मत्याम्, मतौ	”	मतिषु	नद्याम्	”	नदीषु
सं०	हे मते	हे मती	हे मतयः	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

शब्द-कोष

श्रुति	वेद	भक्ति	भक्ति	पत्नी	स्त्री	नगरी	नगर
गति	चाल	वृत्ति	गुज़ारा	नारी	स्त्री	भागीरथी	गङ्गा
सृष्टि	संसार	मुक्ति	मोक्ष	महिषी	रानी	भगिनी	बहिन
भीति	भय	भूति	ऐश्वर्य	कुमारी	कन्या		
प्रीति	प्यार	बुद्धि	अक़ल	जननी	माता		
भूमि	पृथिवी	कृति	काम	तरुणी	युवति		
नीति	नीति	कीर्ति	यश	गौरी	पार्वती		
रात्रि	रात	विपत्ति	कष्ट	रजनी	रात		
शक्ति	ताकत	विभूति	ऐश्वर्य	विदुषी	लिखी पढ़ी स्त्री		
प्रकृति	स्वभाव	धृति	धैर्य	पुत्री	बेटी		

उदाहरण :—

१. स्त्री हाथ से बेल को छूती है।	१. नारी करेण लतां स्पृशति ॥
२. मुक्ति के लिये ध्रुव ने ईश्वर-भजन किया।	२. ध्रुवो मुक्त्यै ईश्वरमभजत् ॥
३. रात को कम्मियों के फूल खिलते है।	३. रात्रौ कैरवाणि विकसन्ति ॥
४. राम प्रकृति से ही साधु था।	४. रामः प्रकृत्यैव साधुरासीत् ॥
५. स्त्रियों ने भक्ति से गौओं के लिये दान दिया।	५. स्त्रियां भक्त्या गोभ्यो दानमयच्छन् ॥

तुदादिगण

*तुद् (दुःख देना), परस्मैपद

	लट लकार (Present Tense)			लङ्लकार (Past Tense)		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	तुदति	तुदतः	तुदन्ति	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
म०	तुदसि	तुदथः	तुदथ	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उ०	तुदामि	तुदावः	तुदामः	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

*तुदादिगण में प्रत्यय से पूर्व धातु के अन्त में 'अ' विकरण आता है। भ्वादिगण और तुदादिगण में भेद इतना है कि भ्वादिगण में प्रत्यय लगाने पर गुण और वृद्धि हो जाते हैं। परन्तु तुदादिगण में नहीं होते।

लज्ज् (लज्जा करना), आत्मनेपद

लट् लकार (Present Tense)	एक०	द्वि०	बहु०	लङ् लकार (Past Tense) एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	लज्जते	लज्जेते	लज्जन्ते	अलज्जत	अलज्जेताम्	अलज्जन्त
म०	लज्जसे	लज्जेथे	लज्जध्वे	अलज्जथाः	अलज्जेथाम्	अलज्जध्वम्
उ०	लज्जे	लज्जावहे	लज्जामहे	अलज्जे	अलज्जावहि	अलज्जामहि

धातुकोष

परस्मैपद

इष् (इच्छ्)	इच्छा करना	इच्छति, ऐच्छत्
प्रच्छ् (पृच्छ्)	पूछना	पृच्छति, अपृच्छत्
स्पृश्	छूना	स्पृशति, अस्पृशत्
सृज्	छोड़ना	सृजति, असृजत्
स्फुर्	फड़कना	स्फुरति, अस्फुरत्

आत्मनेपद

मृ (म्रिय्)	मरना	म्रियते, अम्रियत
आ + दृ (आद्रिय्)	आदर करना	आद्रियते, आद्रियत

उभय पद

विन्द्	पाना	विन्दति, अविन्दत्, विन्दते, अविन्दत
मुच (मुञ्च्)	छोड़ना	मुञ्चति, अमुञ्चत्, मुञ्चते, अमुञ्चत
सिच् (सिञ्च्)	सींचना	सिञ्चति, असिञ्चत् सिञ्चते, असिञ्चत

उदाहरण :—

१. संसार सूर्य से सुख पाता है।	१. सूर्यात् सुखं विन्दति लोकः ॥
२. रस्सी के भ्रम से मोहन सांप को छूता है।	२. रज्जु भ्रमेण मोहनः सर्पं स्पृशति॥
३. तू पाप से क्यों लज्जा नहीं करता।	३. कथं पापात् न लज्जसे ॥
४. जल से किसान अपने खेतों को सींचते हैं।	४. जलेन कृषकाः स्वक्षेत्राणि सिञ्चन्ति ॥

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

तुम्हारी माता के लिये मैं श्रद्धाभाव से रामायण लाया। युवति ने नीति से शत्रुओं पर विजय पाई। भले कामों से संसार में कीर्ति फैलती है[१]। वे मूर्ख पण्डित काशी में पढ़ते थे। इस नगरी की रानी बड़ी बुद्धिमती थी। श्रुति और स्मृति में धर्म का उपदेश है। द्रौपदी दुर्योधन की मूर्खता की याद से[२] हंसी। ईश्वर भक्ति से विपत्तियां आसान[3] हो जाती हैं।

मूर्खों को अपने कुकृत्यों[४] पर भी लज्जा नहीं आती। किसान[५] जल से खेतों को सींचता है। आज मेरी दाईं आंख फड़कती है[६]। योधा लोग शत्रुओं पर तीर चलाते हैं[७]। शेर मारे बिना नहीं छोड़ता। गुरु ने शिष्यों को प्रश्न पूछे। हमारे घर में रात को चोर आ घुसे[८]। राजा ने कहा "यह कैसा महापुरुष है? मेरे जैसे छोटे २ जीव पैदा होते हैं और मरते रहते हैं"। जो धर्म करता है वह सुख पता है। दशरथ ने राम को राज्य देना चाहा पर उस का मनोरथ पूर्ण न हुआ। डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद स्वतन्त्र भारत के सर्वप्रथम प्रधान निर्वाचित हुए हैं। वीर पुरुष विपत्ति में भी अपने धैर्य को नहीं छोड़ते। प्रियंवदा और अनुसूया कण्व के आश्रम में रहती थीं। वे दोनों शकुन्तला की सखियां थीं।

संकेतः—(१) प्रसरति (२) स्मृत्या (३) सुगमाः (४) कुकृत्येषु (५) कृषकः (६) दक्षिणं नेत्रं स्फुरति (७) शरान् क्षिपन्ति (८) प्राविशन्।

दशमः पाठः

अजन्त स्त्रीलिंग (Contd)

उकारान्त धेनु = गाय

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वि०	धेनुम्	”	धेनूः
तृ०	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
च०	धेन्वै, धेनवे	”	धेनुभ्यः
प०	धेन्वाः, धेनोः	”	”
ष०	” ”	धेन्वोः	धेनूनाम्
स०	धेन्वाम्, धेनौ	”	धेनुषु
संबो०	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः

ऊकारान्त वधू = बहू

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वि०	वधूम्	”	वधूः
तृ०	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
च०	वध्वै	”	वधूभ्यः
प०	वध्वाः	”	”
ष०	”	वध्वोः	वधूनाम्
स०	वध्वाम्	”	वधूषु
संबो०	हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः

ऋकारान्त मातृ = माता

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	”	मातॄः

शेष पितृ शब्द के समान।

ऋकारान्त स्वसृ = बहिन

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वि०	स्वसारम्	”	स्वसॄः

शेष मातृ शब्द के समान।

शब्द-कोष

दुहितृ	बेटी	चमू	सेना
स्वसृ	बहिन	श्वश्रू	सास

उदाहरण :—

१. वह माता को नमस्कार करता है।	१. स मातरं वन्दते ॥
२. गौओं से संसार का बहुत कल्याण होता है।	२. धेनुभिः संसारस्य प्रभूतोपकृतिः भवति ॥
३. सीता रघुओं की वधू थी।	३. सीता रघुनां वधूरासीत् ॥
४. माता में पुत्रियों की श्रद्धा होती है।	४. मातरि दुहितॄणां श्रद्धा भवति ॥
५. घर की शोभा वधू से ही होती है।	५. गृहस्य शोभा वध्वैव भवति ॥

चुरादिगण†

चुर् (चोर्)=चुराना। उभयपद

लट् लकार (Present Tense)

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
म०	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उ०	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे

---

†चुरादिगण के धातु और प्रत्यय के बीच 'अय' विकरण जोड़ा जाता है।

लङ् लकार

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
म०	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत	अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उ०	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि

धातु-कोष

कथ्	कहना	कथयति, कथयते। अकथयत्, अकथयत।
पूज्	पूजा करना	पूजयति, पूजयते। अपूजयत्, अपूजयत।
पाल	पालना	पालयति, पालयते। अपालयत्, अपालयत।
भूष्	सजाना	भूषयति, भूषयते। अभूषयत्, अभूषयत।
चिन्त	चिंता करना	चिन्तयति, चिन्तयते। अचिन्तयत्, अचिन्तयत।
भक्ष्	खाना	भक्षयति, भक्षयते। अभक्षयत्, अभक्षयत।
सूच्	सूचना देना	सूचयति, सूचयते। असूचयत्, असूचयत।
रच्	बनाना	रचयति, रचयते। अरचयत्, अरचयत।
वर्ण्	वर्णन करना	वर्णयति, वर्णयते। अवर्णयत्, अवर्णयत। इत्यादि

उदाहरण :—

१. चोरों ने राजा का धन चुराया।	१. चौराः नृपस्य धनमचोरयन्॥
२. सीता ने अपने पति राम की चिन्ता की।	२. सीता निजपतिं राममचिन्तयत्

३. लोग देवताओं की मूर्तियों को पूजते हैं। ३. लोका देवानां मूर्तीः पूजयन्ति ॥

४. कालिदास ने हिमालय पर्वत का वर्णन किया। ४. कालिदासो हिमालयं पर्वतमवर्णयत ॥

५. माता अपने पुत्र को दण्ड देती है। ५. माता निजपुत्रं दण्डयति ॥

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

चोरों ने राजा के खज़ाने[1] से धन चुराया। सुनार[2] तकड़ी से सोना तोलता है। धोबी ने तालाब पर कपड़े धोये। सिंह चाहे मर जाये पर घास नहीं खाता। मनुष्य जैसा मन में सोचता है, वैसा ही वाणी से बोलता है और वैसा ही कर्म से करता है। पिता ने व्यर्थ ही बालक को दण्ड दिया। बहुएं घर को सजाती हैं। गौओं से मनुष्यमात्र का बहुत कल्याण होता है। दुर्योधन ने अपने मन्त्रियों के साथ गुप्त सलाह की[3]। बालक अपने शरीरों को वस्त्रों से सजाते हैं। द्वारपाल ने कहा "महाराज, दरवाज़े पर[4] कोई नहीं है"। माता और पिता अपने पुत्रों को प्यार करते हैं। चन्द्रगुप्त ने धर्म से प्रजा का पालन किया। सास वधू को उपदेश देती है। जिस देश में बेटियों और बहुओं का अपमान होता है वह देश शीघ्र ही नाश हो जाता है। सीता ने कहा "घर से आते समय जो उपदेश मेरी सास ने मुझे दिया था वह भी मुझे स्मरण है"। जो बालक उपद्रव करते हैं, अध्यापक उन को

दण्ड देते हैं। हंस ने नल से कहा, 'रे नल ! दमयन्ती केवल तुम्हारी ही चिन्ता करती है। जो दूसरों को सताता है" वह स्वयं भी दुःख पाता है। दुर्योधन ने पांडवों को सताया और मारा गया। कुश और लव ने कहा, "हे राजन् ! चक्रवर्ती राम हमारा पिता है"।

संकेत :—(१) राजकोषात्। (२) सुवर्णकारः। (३) अमन्त्रयत्। (४) द्वारि। (५) तुदति।

एकादशः पाठः

अजन्त नपुंसक लिंग

अकारान्त नपुँसकलिङ्ग

सुख = सुख

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	सुखम्	सुखे	सुखानि
द्वि०	सुखम्	सुखे	सुखानि

शेष पुँल्लिङ्ग नर शब्द के समान।

शब्द कोष

वन	जंगल	धन	दौलत	नयन	आंख	पाप	बुरा काम
वस्त्र	कपड़ा	शरीर	देह	मुख	मुंह	दुःख	क्लेश
पुस्तक	किताब	भोजन	खाना	भूषण	ज़ेवर	रत्न	हीरा
मित्र	दोस्त	तृण	तिनका	हृदय	मन	नक्षत्र	तारा
सुवर्ण	सोना	अन्न	अन्न	फल	फल	बीज	बीज
पुष्प	फूल	जल	पानी	आसन	आसन	कमल	फूल का नाम

इकारान्त वारि=जल

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
च०	वारिणे	,,	वारिभ्यः
प०	वारिणः	,,	,,
ष०	,,	वारिणोः	वारीणाम्
स०	वारिणि	,,	वारिषु
सम्बो०	हे वारि, वारे	वारिणी	वारीणि

उकारान्त मधु=शहद

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
च०	मधुने	,,	मधुभ्यः
प०	मधुनः	,,	,,
ष०	,,	मधुनोः	मधूनाम्
स०	मधुनि	,,	मधुषु
सम्बो०	हे मधु, मधो	मधुनी	मधूनि

ऋकारान्त कर्तृ=करने वाला

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि
द्वि०	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि

शेष पुंल्लिङ्ग दातृ शब्द के समान।

शब्द कोष

अश्रु	आंसू	धातृ	धारण करने वाला
अम्बु	जल	ज्ञातृ	जानने वाला
वस्तु	पदार्थ	हन्तृ	मारने वाला
जानु	घुटना	रक्षितृ	रक्षा करने वाला
स्वादु	स्वाद वाला		

उदाहरण

१. मित्र मेरे ऋण का करने वाला है।	१. मित्रं कर्तृ ऋणस्य मे॥
२. कवच योधाओं के शरीर की रक्षा करने वाला होता है।	२. कवचं योधानां शरीरस्य रक्षितृ भवति॥
३. मेरी पुस्तक कहां है ?	३. मम पुस्तकं कुत्र अस्ति ?
४. लड़की की आंखों से आंसू गिरे।	४. बालिकायाः नेत्राभ्यामश्रूणि अपतन्॥
५. क्या तेरे घर में शहद का बर्तन है ?	५. किं तव गृहे मधुनः पात्रमस्ति ?

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

तुम इस पुस्तक को व्यर्थ[1] क्यों समझते हो ? भूचाल से[2] सुन्दर घर भी नष्ट हो जाते हैं। बसन्त में वृक्षों पर नये पत्ते[3] और मनोहर फूल पैदा होते हैं। सीता की आंखों से आँसू[4]

गिरे। शहरों में सब चीज़ें आसानी से[५] मिल जाती हैं। संसार में सब चीज़ें नाश हो जाती हैं पर आत्मा नाश नहीं होती। मधुर वचनों से क्रोध नाश होता है। उद्यम से लोग कुएं से[६] जल पा[७] लेते हैं। बन में सुन्दर फल और फूल मन को लुभाते थे[८]। स्त्रियों ने सुन्दर भूषण धारण किये। सिपाही ने[९] अपना पुनर्जन्म समझा। शहद के लिये लोग मक्खियों को[१०] पालते हैं। राम के छोटे भाई ने सब वस्तुओं को देखा। इस बाग के आम[११] बहुत स्वाद हैं। बालक घुटनों से चलता है। रिश्तेदार भी विपत्ति में छोड़ देते हैं। ज्ञान से मन शुद्ध होता है। बच्चे आंखों से अपने खिलौने[१२] देखते हैं। पण्डित शास्त्रों का अभ्यास करते हैं।

संकेतः— १. निष्फलम्। २. भूकम्पेन। ३. पत्राणि। ४. अश्रूणि
५. सुगमतया। ६. कूपात्। ७. लभन्ते। ८. हरन्तिस्म।
९. सैनिकः। १०. मक्षिकाः ११. आम्राणि १२. क्रीड़नकानि।

द्वादशः पाठः

लृट् लकार (Future Tense)

लृट् लकार (Future Tense) में भी धातु के साथ लट् लकार (Present Tense) की तरह ही प्रत्यय जोड़े जाते हैं। परन्तु धातु और प्रत्यय के बीच 'स्य' जोड़ा जाता है। सेट्* धातुओं में 'स्य' से पहले 'इ' (इट्) और अधिक जोड़ा जाता है। परन्तु अनिट् धातुओं में 'इ' नहीं जोड़ा जाता।

पठ्=पढ़ना (भ्वादिगण) परस्मैपद

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	पठिष्यति (वह पढ़ेगा)	पठिष्यतः (वे दो पढ़ेंगे)	पठिष्यन्ति (वे सब पढ़ेंगे)
म०	पठिष्यसि (तू पढ़ेगा)	पठिष्यथः (तुम दो पढ़ोगे)	पठिष्यथ (तुम सब पढ़ोगे)
उ०	पठिष्यामि (मैं पढ़ूंगा)	पठिष्यावः (हम दो पढ़ेंगे)	पठिष्यामः (हम सब पढ़ेंगे)

सेव्=सेवा करना (भ्वादिगण) आत्मनेपद

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
म०	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उ०	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

*अध्यापक को सेट् और अनिट् का भेद विद्यार्थियों को समझा देना चाहिये।

धातु कोष

सेट् धातु			अनिट् धातु		
गम्	जाना	गमिष्यति	त्यज्	छोड़ना	त्यक्ष्यति
भू	होना	भविष्यति	दा	देना	दास्यति
वद्	बोलना	वदिष्यति	पा	पीना	पास्यति
कृ	करना	करिष्यति, करिष्यते	नम्	झुकना या नमस्कार करना	नंस्यति
हृ	चुराना	हरिष्यति, हरिष्यते	दृश्	देखना	द्रक्ष्यति
स्मृ	याद करना	स्मरिष्यति	जि	जीतना	जेष्यति
रच्	बनाना	रचयिष्यति	मुच्	छोड़ना	मोक्ष्यति
चिन्त्	सोचना	चिन्तयिष्यति	शक्	समर्थ होना, सकना	शक्ष्यति
लिख्	लिखना	लेखिष्यति	पच्	पकाना	पक्ष्यति
प्रीण्	प्रसन्न करना	प्रीणयिष्यति	सृज	छोड़ना	स्रक्ष्यति
दण्ड्	दण्ड देना	दण्डयिष्यति	क्रुध्	क्रोध करना	क्रोत्स्यति
खाद्	खाना	खादिष्यति	वप्	बोना	वप्स्यति
धाव्	भागना	धाविष्यति	नश्	नाश होना	नंक्ष्यति
रक्ष्	रक्षा करना	रक्षिष्यति	दह्	जलाना	धक्ष्यति
गर्ज	गर्जना	गर्जिष्यति	तुद्	दुःख देना	तोत्स्यति
पीड्	पीडा देना	पीड़यिष्यति	प्रच्छ	पूछना	प्रक्ष्यति

उदाहरण:—

१ शकुन्तला आज पतिगृह को जायेगी।	१. अद्य शकुन्तला पतिगृहं यास्यति।
२. पांच छः दिनों में हम वहां जाएंगे।	२. पञ्चषैः दिनैः वयं तत्र गमिष्यामः।
३. मोहन पिता की सेवा करेगा।	३. मोहनः पितरं सेविष्यते।
४. हम सब वहां पत्र लिखेंगे।	४. वयं तत्र पत्राणि लेखिष्यामः।
५. वीर युद्ध में शत्रुओं को हराएंगे।	५. वीराः रणे सपत्नान् जेष्यन्ति।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

उसके कहने पर लोग विश्वास करेंगे। तुम्हारी सब कठिनाइयां दूर हो जाएंगी। वह अपने किये पर पश्चात्ताप करेगा। कल मेघ गर्जेंगे और वर्षा होगी। मैं कदापि झूठ न बोलूंगा। पिता के उपदेश का प्रभाव पुत्र पर अवश्य पड़ेगा। नगरवासी[1] अभ्यागत[2] की सेवा करेंगे। क्या तुम सैर के लिये[3] पर्वत पर जाओगे? वह इस बात की अपने पिता को सूचना देगा[4]। अपने आचरण से मैं अध्यापक को प्रसन्न करूंगा[5]। राम ने कहा कि रावण अपने किये का फल अवश्य पायेगा। कृष्ण ने अर्जुन को कहा कि यदि तुम नहीं लड़ोगे तो दूसरे वीर तुम्हें कायर[6] कहेंगे। मैं तेरे कमरे में[7] फिर प्रविष्ट नहीं होऊंगा। हम गङ्गा नदी पर जायेंगे और वहां स्नान करेंगे।

सूर्य अस्त होने से पहले हम घर पहुँच जायेंगे। शीघ्र ही सूर्य अस्त हो जायगा और सर्वत्र अन्धकार फैल जायगा। कल[८] प्रातः सूर्य फिर उदय होगा[९]। किसान खेती में बीज बोएगा। तुम शीघ्र ही अपने परिश्रम का फल पाओगे। जब तक पृथिवी पर पर्वत और नदियां रहेंगी तब तक रामायण की कथा का प्रचार रहेगा। शस्त्र शिक्षा के बिना हम अपने देश की रक्षा के लिये समर्थ नहीं होंगे[१०]।

संकेतः— (१) नागरिकाः। (२) अतिथिम्। (३) भ्रमणाय। (४) सूचयिष्यति। (५) प्रीणयिष्यामि। (६) कातरम्, कापुरुषम्। (७) प्रकोष्टे। (८) श्वः। (९) उदेष्यति। (१०) न प्रभविष्यामः।

त्रयोदशः पाठः

हलन्त पुंलिङ्ग

*वत्, मत् और अत् अन्त वाले शब्द

बलवत् = बलवान्

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	बलवान्	बलवन्तौ	बलवन्तः
द्वि०	बलवन्तम्	,,	बलवतः
तृ०	बलवता	बलवद्भ्याम्	बलवद्भिः

*अकारान्त और आकारान्त शब्दों के साथ 'वत्' जोड़ा जाता है। परन्तु इकारान्त, उकारान्त, ओकारान्त आदि शब्दों के साथ 'मत्' जोड़ा जाता है।

च०	बलवते	बलवद्भ्याम्	बलवद्भ्यः
प०	बलवतः	,,	,,
ष०	,,	बलवतोः	बलवताम्
स०	बलवति	,,	बलवत्सु
सम्बो०	हे बलवन्	हे बलवन्तौ	हे बलवन्तः

शब्द-कोष

फलवत्	फल वाला	धनवत्	धन वाला
भगवत्	ऐश्वर्य वाला	हितवत्	हित वाला
भवत्	आप	गुणवत्	गुण वाला
पुत्रवत्	पुत्र वाला	यावत्	जितना
दयावत्	दया वाला	एतावत्	इतना
कियत्	कितना	बुद्धिमत्	बुद्धि वाला
तावत्	उतना	आयुष्मत्	आयु वाला
इयत्	इतना	मूर्तिमत्	मूर्ति वाला
श्रीमत्	लक्ष्मी वाला	गोमत्	गौ वाला

अत् अंत वाले (शत्रन्त) शब्द लट् लकार, प्रथमपुरुष, बहुवचन की क्रिया के अन्तिम खण्ड 'अन्ति' को हटा कर और उसके स्थान में 'अत्' को जोड़ कर बनाये जाते हैं। जैसे 'गच्छन्ति' के 'अन्ति' को हटा कर 'अत्' जोड़ने से गच्छत् (गच्छ् +अत्) बनता है। इसी प्रकार पठत् (पढ़ता हुआ), चलत् (चलता हुआ), पचत् (पकाता हुआ) आदि रूप बनते हैं।

गच्छन् = जाता हुआ

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वि०	गच्छन्तम्	,,	गच्छतः

शेष रूप बलवत् शब्द के समान ।

स्त्रीलिंग शब्द बनाने के लिये 'मत्' 'वत्' और 'अत्' के अंत में 'ई' जोड़ा जाता है और नदी शब्द के समान उच्चारण किया जाता है। जैसे गुणवती, श्रीमती, धीमती इत्यादि ।

उदाहरण :—

१. फल वाले वृक्ष झुके रहते हैं।	१. फलवन्तो वृक्षा नम्रा भवन्ति।
२. जाते हुये मुसाफिर मार्ग में ठहरे।	२. गच्छन्तः पथिकाः पथि अतिष्ठन ।
३. तू पढ़ते हुए बालक को क्यों सताता है ?	३. पठन्तं बालकं किमर्थं तुदसि ?
४. भगवान् की कृपा से हरि के दुःख नाश हुए।	४. भगवतः कृपया हरेर्दुःखानि अनश्यन् ।
५. गुण वाले और पुण्य वाले सब जगह पूजे जाते हैं।	५. गुणवन्तः पुण्यवन्तश्च सर्वत्र पूज्यन्ते ।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

वृक्ष से गिरते हुए पत्ते पीले रङ्ग के हैं[1]। मोहन खेलते हुए बालकों को सताता है। चोर धनवालों के घर में घुस गये[2], परन्तु उन को कुछ न मिला। सन्देह वाली बातों पर सज्जन कभी भी

विश्वास नहीं करते। बलवान पर[3] कोई क्रोध नहीं करता। धन वाले संसार में सदा बल वाले होते हैं। सन्तान वाले कभी किसी को गाली नहीं देते[४]। दया वाले किसी को दुःख नहीं देते। मैं अपने ऊपर भरोसा रखता हूँ[५]। वह राजा की आज्ञा का उल्लङ्घन करता है। नेताजीके लैक्चर से[६] सब लोग प्रसन्न हुए। श्रीमान् जी, आपकी कृपा से मैं ने यह धन पाया है। जो मनुष्य अधिक गुण वाला है वह वास्तव में[७] बड़ा है। विद्या वाले पुरुषों की योग्यता की परीक्षा दर्शन शास्त्रों में ही होती है। सीता, सावित्री आदि स्त्रियां बहुत गुणवती थीं। गुणी मनुष्य को सब लोग नमस्कार करते हैं। आप के पूज्य पिता जी कहां रहते हैं? भगवान् कृष्ण ने अर्जुन से कहा– अर्जुन! "बुद्धिमान् लोग धैर्य से कष्टों को सहारते हैं"। सच्चे मार्ग पर चलते हुए पुरुष को किसी का भी डर नहीं होता। जैसे मनुष्य कुदाल[८] से खोदता हुआ[९] पानी पा लेता है वैसे ही विद्यार्थी गुरु की सेवा करता हुआ विद्या को पा लेता है। प्रसन्नता से नाचता हुआ बालक माता के पास गया और बोला, माता जी! 'पिता जी आ गये हैं"। अभ्यास से बहुत कठिन काम भी बहुत आसान हो जाते हैं। इतना परिश्रम मत करो, नहीं तो[१०] तुम्हारा स्वास्थ्य खराब हो जायगा। हित करने वाले पराये भी बन्धु होते हैं और हित न करने वाले बन्धु भी पराये होते है।

संकेतः— (१) पीत वर्णानि। (२) अविशन्। (३) वलवते। (४) अपभापन्ते। (५) विश्वसिमि। (६) वक्तव्येन। (७) वस्तुतः। (८) खनित्रेण। (९) खनन्। (१०) अन्यथा।

चतुर्दशः पाठः

लोट् लकार (Imperative Mood)

लोट् लकार आज्ञा देने, प्रार्थना करने, प्रश्न और आशीर्वाद देने आदि के लिये प्रयुक्त किया जाता है।

पठ् – पढ़ना (परस्मैपद)

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	पठतु (वह पढ़े)	पठताम् (वे दो पढ़ें)	पठन्तु (वे सब पढ़ें)
म०	पठ (तू पढ़)	पठतम् (तुम दो पढ़ो)	पठत (तुम सब पढ़ो)
उ०	पठानि (मैं पढ़ूं)	पठाव (हम दो पढ़ें)	पठाम (हम सब पढ़ें)

सेव् – सेवा करना (आत्मनेपद)

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
म०	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उ०	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

धातु-कोष

(परस्मैपद)

मज्ज्	स्नान करना	मज्जतु	वह्	उठाना	वहतु
दिश्	कहना	दिशतु	चर्	फिरना, चरना	चरतु
यज्	हवन करना	यजतु	वप्	बोना	वपतु

(आत्मनेपद)

अप + मन्	अपमान करना	अपमन्यताम्
आशंस	आशा करना	आशंसताम्
अव + लम्ब्	आश्रय लेना	अवलम्बताम्
जन्	पैदा होना	जायताम्
आरभ	आरम्भ करना	आरभताम
परि + ईक्ष	परीक्षा करना	परीक्षताम्

उदाहरण

१. तू रामायण का पाठ कर।	१. त्वं रामायणं पठ॥
२. राजन्! तेरी जय हो।	२. राजन्! विजयस्व॥
३. तू यह पुस्तक मत खरीद।	३. त्वमेतत् पुस्तकं मा क्रीणीष्व॥
४. ईश्वर को याद करो।	४. ईश्वरं भजत॥
५. महाराज! आप का कल्याण हो।	५. महाराज! स्वस्ति भवते भवतु॥
६. मैं और क्या करूं।	६. किमन्यत् करवाणि॥

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

देखो चिड़िया[1] उड़ न[2] जाय। भागो मत, धीरे २ चलो, नहीं तो गिर पड़ोगे। हर एक से हंसी मत करो, नहीं तो परिणाम बुरा होगा। इस वृक्ष पर बैठी हुई कोयल को देखो। प्रातःकाल उठो।

सैर को जाओ। कुछ व्यायाम करो। नहा कर सन्ध्या वन्दना करो। गायत्री मन्त्र का जप करो। फिर पाठशाला को जाओ। समय पर वहां पहुंचो। अपने स्थान पर बैठो। ध्यान से पढ़ो। पढ़ा हुआ पाठ याद करो। अध्यापक और माता पिता का आदर करो। तुम यहां बैठो, हम अभी आते हैं। परिश्रम से विद्या को ग्रहण करो, सुख पाओगे। आज छुट्टी[3] है, आओ सैर के लिये बाहिर चलें। शिष्य नम्रता से अध्यापकों और माता पिता के वचनों को पालें। आज कोई बाहिर न जाय। नौकर को बुलाओ[4] और उस से कुछ फल मंगवाओ[5]। मेरी बात मानो और इस हठ को[6] छोड़ दो। मोहन! तू इस वृक्ष पर चढ़ जा और शाखाओं को हिला। आओ हम इस विषय में मन्त्रणा कर लें। पूज्यों को तू-तू न कर[7] ईश्वर लोग आपस के विरोध को छोड़ दें। अर्जुन! तू अपना धनुष उठा और शत्रुओं से युद्ध कर। बिना बिचारे कोई भी काम मत कर। लोग मन की शुद्धि के लिये और आत्मा के कल्याण के लिये शास्त्र पढ़ें। राजा लोग अपने बल से प्रजा की रक्षा करें।

संकेत :— (१) चटका। (२) मा उड्डयताम्। (३) अवकाशः। (४) आह्वय। (५) नायय। (६) आग्रहम्। (७) पूज्यान् मा त्वं कुरु।

— —

पंचदशः पाठः

विधिलिङ् लकार (Potential Mood)

उपदेश, सम्भावना, आज्ञा, निमन्त्रण और प्रश्न आदि में विधिलिङ् का प्रयोग होता है।

जब किसी क्रिया के औचित्य का भाव प्रकट करना हो, अर्थात् अमुक क्रिया होनी चाहिये या नहीं, तो विधिलिङ् का प्रयोग किया जाता है।

आचार-व्यवहार आदि के विषय में भी शिक्षा-उपदेश देने के लिये विधिलिङ् का प्रयोग किया जाता है, लोट का नहीं।

	पठ् = पढ़ना (परस्मैपद)			सेव् = सेवा करना (आत्मनेपद)		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
म०	पठेः	पठेतम्	पठेत	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उ०	पठेयम्	पठेव	पठेम	सेवेय	सेवावहि	सेवामहि

धातु कोष

(परस्मैपद)			(आत्मनेपद)		
वस्	रहना	वसेत्	रुच् (रोच्)	अच्छा लगना	रोचेत
वह्	उठाना	वहेत्	एध	बढ़ना	एधेत
तुल्	तोलना	तोलयेत्	श्रि (श्रय्)	सहारा लेना	श्रयेत
नृत्	नाचना	नृत्येत्	क्षम्	क्षमा करना, सहारना	क्षमेत

उदाहरण :—

(१) हम सौ साल तक जियें।	(१) जीवेम शरदः शतम्।
(२) मैं कभी भी किसी की वस्तु न चुराऊं।	(२) न कदापि कस्यापि वस्तु चोरयेयम्।
(३) क्षत्रिय युद्ध से मुँह न मोड़े।	(३) क्षत्रियः संग्रामान्न निवर्तेत।
(४) बिना विचारे काम न करना चाहिये।	(४) सहसा विदधीत न क्रियाम् (नाविमृश्य कुर्यात्)।
(५) दान देकर चर्चा नहीं करनी चाहिये।	(५) न दत्त्वा परिकीर्तयेत्।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

धर्मात्मा राजा प्रजा को प्रसन्न करने का यत्न करें। विद्वानों की सभा में मूर्ख चुप रहें। शत्रु और व्याधि की बुद्धिमान् उपेक्षा न करें[1]। राजा ने कहा कि मेरे बाद मेरा बड़ा[2] पुत्र राजा बने। परमेश्वर की कृपा से तुम पास हो जाओ। मैं प्राथना करता हूं कि तुम्हारी मनोकामनाएं[3] पूरी हों। बेटा तुम सौ साल तक जीवित रहो। जवाहर लाल भारत के भविष्य को उज्ज्वल करने का यत्न करें। भारत के सामने सब देश नतमस्तक हों। स्त्रियां पतिव्रता हों, गौएं बहुत दूध दें और मनुष्य सदाचारी हों। यदि सुखी रहना चाहते हो तो किसी को दुःख न दो। भगवान् तुम्हें सद्बुद्धि प्रदान करें। सूने घर में अकेला नहीं सोना चाहिये[4]। सरकार द्वारा नियत किये गये मूल्य से अधिक लेने वालों को अधिकारी लोग दण्ड दें। धन के रखने वा खर्च करने में पत्नी को लगाना चाहिये[5]। शरीर को कष्ट न देकर धन का संग्रह करना चाहिये[6]। शास्त्र कहते

हैं कि पुत्र की इच्छा वाला पुत्रेष्टि यज्ञ करे। देश और धर्म के लिये वीर पुरुष अपने प्राणों को भी त्याग दें। मनुष्य विद्या और धन की प्राप्ति के लिये सदा यत्न करें। समय पर मनुष्य शत्रु को भी कन्धे पर उठा ले७। विद्वान् पुरुष अपनी विद्या से सारे संसार का कल्याण करें।

संकेत :— (१) नोपेक्षेत। (२) ज्येष्ठः। (३) मनोरथाः। (४) शयीत। (५) नियोजयेत्। (६) अक्लेशेन शरीरस्य कुर्वीत धनसञ्चयम्। (७) स्कन्धे वहेत्।

षोडशः पाठः

हलन्त पुँल्लिङ्ग (Contd)

तकारान्त, दकारान्त, चकारान्त और जकारान्त शब्द

	तकारान्त मरुत् = वायु			चकारान्त पयोमुच = बादल		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	मरुत्	मरुतौ	मरुतः	पयोमुक	पयोमुचौ	पयोमुचः
द्वि०	मरुतम्	”	”	पयोमुचम्	”	”
तृ०	मरुता	मरुद्भ्याम्	मरुद्भिः	पयोमुचा	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भिः
च०	मरुते		मरुद्भ्यः	पयोमुचे	”	पयोमुग्भ्यः
प०	मरुतः		”	पयोमुचः	”	”
ष०	मरुतः	मरुतोः	मरुताम्	”	पयोमुचोः	पयोमुचाम्
स०	मरुति		मरुत्सु	पयोमुचि	”	पयोमुक्षु
सं०	हे मरुत्	हे मरुतौ	हे मरुतः	हे पयोमुक्	हे पयोमुचौ	हे पयोमुचः

जकारान्त सम्राज् = महाराज				दकारान्त सुहृद् = मित्र		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः	सुहृत-द्	सुहृदौ	सुहृदः
द्वि०	सम्राजम्	”	”	सुहृदम्	”	”
तृ०	सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः	सुहृदा	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भिः
च०	सम्राजे	”	सम्राड्भ्यः	सुहृदे	”	सुहृद्भ्यः
प०	सम्राजः	”	”	सुहृदः	”	”
ष०	”	सम्राजोः	सम्राजाम्	”	सुहृदोः	सुहृदाम्
स०	सम्राजि	”	सम्राट्सु	सुहृदि	”	सुहृत्सु
सं०	हे सम्राट्	हे सम्राजौ	हे सम्राजः	हे सुहृत्-द्	हे सुहृदौ	हे सुहृदः

शब्द-कोष

भूभृत्	पर्वत	जलमुच्	बादल
परिव्राज्	सन्यासी	तमोनुद्	अंधकार को दूर करने वाला
विश्वजित्	संसार को जीतने वाला	वारिमुच्	बादल
		विभ्राज्	चमकने वाला
इन्द्रजित्	मेघनाद (इन्द्र को जीतने वाला)	ऋत्विज्	यज्ञ करने वाला
		दुर्हृद्	शत्रु

उदाहरण :—

१. हिमालय पर्वत की शोभा का कालिदास ने वर्णन किया।	१. भूभृतो हिमालयस्य शोभां कालिदासोऽवर्णयत्।

२. बरसात में बादल पानी के ढेर बरसाते हैं।	वर्षासु पयोमुचो जलस्य राशीन् वर्षन्ति (मुञ्चन्ति)।
३. विश्व को जीतने वाले के लिये नमस्कार।	३. विश्वजिते नमः।
४. सम्राट् अशोक बौद्ध धर्म का महान् प्रचारक था।	४. सम्राडशोको बौद्धधर्मस्य महान् प्रचारक आसीत्।
५. मित्र का वचन टालने के योग्य नहीं है।	५. सुहृदो वचनमलंघनीयमस्ति !

अदादिगण *

अद्=खाना (परस्मैपद)

	लट् लकार			लङ् लकार		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	अत्ति	अत्तः	अदन्ति	आदत्	आत्ताम्	आदन्
म०	अत्सि	अत्थः	अत्थ	आदः	आत्तम्	आत्त
उ०	अद्मि	अद्वः	अद्मः	आदम्	आद्व	आद्म

	लोट् लकार			विधिलिङ् लकार		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
म०	अद्धि	अत्तम्	अत्त	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
उ०	अदानि	अदाव	अदाम	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

*अदादिगण में कोई विकरण नहीं जोड़ा जाता

लृट् लकार

प्र०	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
म०	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
उ०	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

शी = सोना (आत्मनेपद)

	लट् लकार			लङ् लकार		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	शेते	शयाते	शेरते	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
म०	शेषे	शयाथे	शेध्वे	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
उ०	शये	शयावहे	शयामहे	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

	लोट् लकार			विधिलिङ् लकार		
प्र०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
म०	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उ०	शयै	शयावहै	शयामहै	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

लृट् लकार

प्र०	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
म०	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उ०	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

धातु-कोष

अस् = होना

लट्	लङ्	लोट	विधिलिङ्	लृट्
अस्ति,	आसीत्,	अस्तु,	स्यात,	भविष्यति

लट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्	लृट्
हन्=मारना				
हन्ति,	अहन्,	हन्तु,	हन्यात्,	हनिष्यति
शास्=आज्ञा देना				
शास्ति,	अशात्,	शास्तु,	शिष्यात्,	शसिष्यति
स्तु=स्तुति करना				
स्तौति स्तवीति	अस्तौत् अस्तवीत्	स्तौतु स्तवीतु	स्तुयात् स्तवीयात्	स्तोष्यति
जागृ=जागना				
जागर्ति,	अजागः,	जागर्तु,	जागृयात्,	जागरिष्यति
स्वप्=सोना				
स्वपिति,	अस्वपत् अस्वपीत्	स्वपितु,	स्वप्यात्,	स्वप्स्यति
इण्=जाना				
एति,	ऐत्,	एतु,	इयात्,	एष्यति
अधि+इ=पढ़ना				
अधीते,	अध्यैत,	अधीताम्,	अधीयीत,	अध्येष्यते
ब्रू=बोलना				
ब्रवीति,	अब्रवीत्,	ब्रवीतु,	ब्रूयात्,	वक्ष्यति

उदाहरण :—

१. मैं सदा दस बजे भोजन खाता हूं।	१. अहं सदा दशवादन काले भोजनम् अद्मि ॥
२. ईश्वर सब पर शासन करता	२. ईश्वरः सर्वान् शास्ति ॥
३. तू प्रातः कब जागता है ?	३. त्वं प्रातः कदा जागर्सि ?
४. मनुष्य सदा सत्य बोले, झूठ न बोले।	४. मनुष्यः सदा सत्यं ब्रूयात्, अनृतं न ब्रूयात् ॥
५. विदर्भ देश में भीम नामी राजा था।	५. विदर्भ देशे भीमो नाम नृप आसीत् ॥

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

श्रीकृष्ण ने कहा कि यह आत्मा नहीं मरती। वायुओं का स्वामी इन्द्र अर्जुन को देखना चाहता था। मेरा मित्र कल[1] इन्द्र-प्रस्थ की ओर गया। वीरवर ने उस स्त्री से पूछा– भगवति तू क्यों रो रही है ? सम्राट् ने घोषणा की[2] कि कोई मनुष्य नगर से बाहिर न जाए। पुराने समय में[3] लङ्का में एक रावण नामी राजा राज करता था। उस का पुत्र मेघनाद था जिस ने इन्द्र को जीता था। विश्व को जीतने वाले रावण को भी राम ने एक ही बाण से मार दिया। पर्वतों की चोटियों पर बर्फ गिरी। ऋषि लोग वन में रहते तथा फल फूल खाते और तपस्या करते हैं। ईश्वर ने हमें

पवन दी है जिस से हम सांस लेते हैं[४]। जो राजा न्याय से प्रजा का पालन करता है वह प्रजा का प्रिय बन जाता है। भारत के अन्तिम चक्रवर्ती सम्राट् का नाम हर्षवर्धन था। कुत्ता बोला मेरा स्वामी घर में सो रहा है[५]। बालक को ध्यान से विद्या पढ़नी चाहिए[६]। वीरवर ने भगवती सर्वमङ्गला की स्तुति की। गिद्ध ने कहा- जो दूसरों का मांस खाता है वह पाप करता है। योगी लोग अपराधी प्राणियों पर भी दया करते हैं।

संकेत :— [१] ह्यः। [२] अघोषयत्। [३] पुरा।
[४] श्वसिमः। [५] शेते। [६] अधीयीरन्।
[७] गृध्रः।

सप्तदशः पाठः

हलन्त पुँल्लिङ्ग (Contd)

अन्, इन्, अस, इयस् और वस् प्रत्ययान्त शब्द।

	आत्मन्=आत्मा, अपना आप			राजन्=राजा		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः	राजा	राजानौ	राजानः
द्वि०	आत्मानम्	”	आत्मनः	राजानम्	”	राज्ञः
तृ०	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
च०	आत्मने	”	आत्मभ्यः	राज्ञे	”	राजभ्यः
प०	आत्मनः	”	”	राज्ञः	”	”
ष०	”	आत्मनोः	आत्मनाम्	”	राज्ञोः	राज्ञाम्
स०	आत्मनि	”	आत्मसु	राज्ञि. राजनि	”	राजसु

स्वामिन्=स्वामी

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	स्वामी	स्वामिनौ	स्वामिनः
द्वि०	स्वामिनम्	”	”
तृ०	स्वामिना	स्वामिभ्याम्	स्वामिभिः
च०	स्वामिने	”	स्वामिभ्यः
प०	स्वामिनः	”	”
ष०	स्वामिनः	स्वामिनोः	स्वामिनाम्
स०	स्वामिनि	”	स्वामिषु
सं०	हे स्वामिन्	हे स्वामिनौ	हे स्वामिनः

चन्द्रमस्=चन्द्रमा

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	चन्द्रमा	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वि०	चन्द्रमसम्	”	”
तृ०	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
च०	चन्द्रमसे	”	चन्द्रमोभ्यः
प०	चन्द्रमसः	”	”
ष०	”	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
स०	चन्द्रमसि	”	चन्द्रमस्सु
सं०	हे चन्द्रमाः	हे चन्द्रमसौ	हे चन्द्रमसः

श्रेयस्=बहुत अच्छा

प्र०	श्रेयान्	श्रेयांसौ	श्रेयांसः
द्वि०	श्रेयांसम्		श्रेयसः
सं०	हे श्रेयन्		श्रेयांसः

शेष रूप चन्द्रमस् के समान होंगे। स्त्रीलिंग में 'ई' जोड़ कर श्रेयसी बनता है। उच्चारण नदीवत्।

विद्वस्=विद्वान्

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वि०	विद्वांसम्	”	विदुषः
तृ०	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
च०	विदुषे	”	विद्वद्भ्यः
प०	विदुषः	”	”
ष०	”	विदुषोः	विदुषाम्

स०	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बो०	हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः

विद्वस् का स्त्रीलिङ्ग विदुषी बनता है। रूप नदी वत्॥

शब्द-कोष

ब्रह्मन्	ब्रह्मा	शशिन्	चांद	वेधस्	ब्रह्मा
अपराधिन	अपराध करने वाला	अश्मन्	पत्थर	योगिन्	योगी
ज्यायस्	बड़ा	एकाकिन्	अकेला	अन्तरात्मन्	हृदय
पक्षिन्	पक्षी	कनीयस्	छोटा	मेधाविन्	बुद्धिमान्
मूर्धन्	सिर	अनुजीविन्	नौकर	प्रेयस्	प्यारा
प्राणिन्	प्राणधारी				

उदाहरण

१. विद्वानों पर सब का विश्वास होता है।	विद्वत्सु सर्वेषां विश्वासो भवति॥
२. राजा अपने राज्य में पूजा जाता है परन्तु विद्वान् सब जगह पूजा जाता है।	स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥
३. कुश लव का बड़ा भाई था।	३. कुशो लवस्य ज्यायान् भ्राता आसीत्॥
४. अपराधी को क्षमा मत कर।	४. अपराधिनं मा क्षमस्व॥
५. यदि अच्छी महिमा है तो गहनों से क्या?	५. सुमहिमा यद्यस्ति किं मण्डनैः?

*जुहोत्यादिगण

दा=देना (उभय पद)

परस्मैपद

लट् लकार				लङ् लकार		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	ददाति	दत्तः	ददति	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
म०	ददासि	दत्थः	दत्थ	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ०	ददामि	दद्वः	दद्मः	अददाम्	अदद्व	अदद्म

लोट् लकार				विधिलिङ् लकार		
प्र०	ददातु	दत्ताम्	ददतु	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
म०	देहि	दत्तम्	दत्त	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उ०	ददानि	ददाव	ददाम	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

लृट् लकार

प्र०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म०	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ०	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

दा=देना (आत्मनेपद)

लट् लकार				लङ् लकार		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	दत्ते	ददाते	ददते	अदत्त	अददाताम्	अददत
म०	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ०	ददे	दद्वहे	दद्महे	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

*जुहोत्यादिगण में धातु को द्वित्व हो जाता है।

लोट् लकार				विधिलिङ् लकार		
प्र० दत्ताम्	ददानाम्	ददताम्		ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म० दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्		ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उ० ददै	ददावहै	ददामहै		ददीय	ददीवहि	ददीमहि

लृट् लकार

प्र० दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
म० दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उ० दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

धातु कोष

	लट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्	लृट्
भी डरना	बिभेति,	अबिभेत्,	बिभेतु,	बिभियात्,	भेष्यति
ह्री लज्जा करना	जिह्रेति,	अजिह्रेत्,	जिह्रेतु,	जिह्रीयात्,	ह्रेष्यति
भृ पालना	बिभर्ति,	अबिभः,	बिभर्तु,	बिभ्रयात्,	भरिष्यति
	बिभृते,	अबिभृत,	बिभृताम्,	बिभ्रीत,	भरिष्यते
हा छोड़ना	जहाति,	अजहात्,	जहातु,	जह्यात्,	हास्यति
हु हवन करना	जुहोति,	अजुहोत,	जुहोतु	जुहुयात्,	होष्यति
धा धारण करना	दधाति,	अदधात्,	दधातु,	दध्यात्,	धास्यति
	धत्ते,	अधत्त,	धत्ताम्,	दधीत,	धास्यते

उदाहरण :—

१. साधु लोग पाप से डरते हैं। | १. साधवः पापात् बिभ्यति॥

२. मैं कल तुझे एक पुस्तक दूंगा। | २. अहं श्वस्ते एकं पुस्तकं दास्यामि॥

३. नल ने पक्षी को छोड़ दिया। ३. नलः पक्षिणं अजहात् ॥

४. ईश्वर ही सब का भरण पोषण करता है। ४. ईश्वर एव सर्वान् बिभर्ति ॥

५. धनवान् निर्धनों को धन देते हैं। ५. धनवन्तो निर्धनेभ्यो धनं ददति ॥

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

राजा दशरथ ने सन्तान की प्राप्ति के लिये यज्ञ किया[1]। वह अकेला ही सारे कुटुम्ब का भरण पोषण करता है। नौकर अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करेंगे। विद्वान् के कहने से राजा ने सब अपराधियों को छोड़ दिया। बालको! सदा श्रेष्ठ धर्म को धारण करो। मनुष्य को कभी भी नहीं डरना चाहिये। चांद के समान वंश में उत्पन्न हुआ पुरुष भी गुणों से रहित शोभा नहीं पाता। ब्रह्मा ने सारे संसार को बनाया। पर्वत, वृक्ष, और पत्थर भी उसी ने बनाए। आत्मा पुराने शरीरों को छोड़ कर नये शरीर धारण करता है। राजा अपने देश में पूजा जाता है, परन्तु विद्वान् सब जगह पूजा जाता है। इस वृक्ष की खोल में[2] बहुत से पक्षी रहते थे। ईश्वर की महिमा का फल सब जगह दिखाई देता है[3]। मनुष्य की बड़ाई या छुटाई अपने कर्मों से ही जानी जाती है[4]। जो रात को जल्दी सोता है और प्रातः जल्दी उठता है वह स्वास्थ्य, धन और बुद्धि को पाता है। सीता ने कहा "मैं आप के साथ वन में भयङ्कर शेरों और चीतों से भी नहीं डरूंगी"। हे ईश्वर! इन दीनों की रक्षा करने वाला तू ही है। महात्मा गांधी का कहना है कि मारने वाले से क्षमा करने वाला बड़ा होता है। लोक निन्दा के भय से राम

ने सीता को वन में छोड़ दिया। जो निर्धनों को धन देता है, ईश्वर उस का कल्याण करता है। मोहन ने रास्ते में[५] कुत्ते[६] को देखा।

संकेत :— (१) अजुहोत्। (२) कोटरं। (३) दृश्यते। (४) ज्ञायते। (५) पथि। (६) कुक्कुरम्।

अष्टादशः पाठः

(हलन्त स्त्रीलिंग)

वाच्=वाणी

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	वाक्	वाचौ	वाचः
द्वि०	वाचम्	”	”
तृ०	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
च०	वाचे	”	वाग्भ्यः
प०	वाचः	”	”
ष०	”	वाचोः	वाचाम्
स०	वाचि	”	वाक्षु
सं०	हे वाक्	हे वाचौ	हे वाचः

दिश्=दिशा

एक०	द्वि०	बहु०
दिक्	दिशौ	दिशः
दिशम्	”	दिशः
दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
दिशे	”	दिग्भ्यः
दिशः	”	”
”	दिशोः	दिशाम्
दिशि	”	दिक्षु
हे दिक	हे दिशौ	हे दिशः

गिर् = वाणी			आशिष् = आशीर्वाद		
प्र० गीः	गिरौ	गिरः	आशीः	आशिषौ	आशिषः
द्वि० गिरम्	”	”	आशिषम्	”	”
तृ० गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः	आशिषा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भिः
च० गिरे	”	गीर्भ्यः	आशिषे	”	आशीर्भ्यः
प० गिरः	”	गीर्भ्यः	आशिषः	”	”
ष० ”	गिरोः	गिराम्	”	आशिषोः	आशिषाम्
स० गिरि	”	गीर्षु	आशिषि	”	आशीःषु
सं० हे गीः	हे गिरौ	हे गिरः	हे आशीः	हे आशिषौ	हे आशिषः

जकारान्त, दकारान्त और नकारान्त आदि शब्दों का उच्चारण पुँल्लिङ्ग के समान होता है।

शब्द-कोष

विद्युत्	बिजली	धुर्	धुरा	समिध्	हवन की लकड़ी
विपद्	विपत्ति	द्वार्	द्वार	सरित्	नदी
सम्पद्	सम्पत्ति	पुर्	नगर	स्रज्	माला
मृद्	मिट्टी	क्षुध्	भूख		

उदाहरणः-

१. हम पूर्व दिशा में जायेंगे।	२. वयं पूर्व दिशि गमिष्यामः॥
२. तोते की वाणी में मिठास होगी।	३. शुकस्य वाचि माधुर्यं भविष्यति॥

३. देवताओं ने समिधाओं से यज्ञ किया।	३. देवाः समिद्भिर्यज्ञम् अकुर्वन् ॥
४. धनियों के द्वार पर याचक खड़े होते हैं।	४. धनिनां द्वारि याचकाः तिष्ठन्ति ॥
५. सम्पत्ति में बड़े आदमियों का मन कमल के समान कोमल होता है।	५. सम्पत्सु महतां चित्तम् भवत्युत्पल कोमलम् ॥

*स्वादिगण

सु=रस निकालना (उभयपद)

परस्मैपद

	लट् लकार			लङ् लकार		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
म०	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
उ०	सुनोमि	सुन्वः सुनुवः	सुन्मः सुनुमः	असुनवम्	असुन्व असुनुव	असुन्म असुनुम

	लोट् लकार			विधिलिङ् लकार		
प्र०	सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
द्वि०	सुनु	सुनुतम्	सुनुत	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
उ०	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम

* स्वादिगण में धातुओं के आगे 'नु' विकरण आता है।

लृट् लकार

प्र०	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति
म०	सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ
उ०	सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः

आत्मनेपद

	लट् लकार			लङ् लकार		
प्र०	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते	असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
म०	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे	असुनुथाः	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
उ०	सुन्वे	सुनुवहे / सुन्वहे	सुनुमहे / सुन्महे	असुन्वि	असुनुवहि / असुन्वहि	असुनुमहि / असुन्महि

	लोट् लकार			विधिलिङ् लकार		
प्र०	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
म०	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
उ०	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

लृट् लकार

प्र०	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
म०	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
उ०	सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे

धातु-कोष

शक् = समथ होना

लट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्	लृट्
शक्नोति,	अशक्नोत्,	शक्नोतु,	शक्नुयात्	शक्ष्यति

आप् = पाना

आप्नोति,	आप्नोत्,	आप्नोतु,	आप्नुयात्,	आप्स्यति

चि=चुनना

चिनोति चिनुते	अचिनोत् अचिनुत	चिनोतु चिनुताम्	चिनुयात् चिन्वीत	चेष्यति चेष्यते

उदाहरण :—

१. क्या तुम यह भार उठाने के लिए समथ हो ?	१. किं त्वमेतं भारं वोढुं शक्नोषि ?
२. जो बुरा काम करते हैं वे दुर्गति को पाते हैं।	२. ये दुष्कर्म कुर्वन्ति ते दुर्गतिमवाप्नुवन्ति ॥
३. उस ने बाग में फूल चुने।	३. स उद्याने पुष्पाणि अचिनोत् ॥
४. तू अपनी माता को क्यों सताता है ?	४. किं त्वं निजमातरं दुनोषि ?
५. कन्या फलों का रस निकालती है।	५. कन्या फलानि सुनोति ?

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

छात्रों ने प्रातःकाल की सन्ध्या समाप्त की[1] और पढ़ना आरम्भ किया। वह इतना बीमार है कि चल फिर भी नहीं सकता। अवकाश होने पर तुम जा सकते हो। शकुन्तला फूलों को चुन रही थी जब दुष्यन्त ने उसे देखा। कैकेयी ने दशरथ से दो वर मांगे[2]। यदि तू परिश्रम करेगा तो सुख पायेगा। बिजली आकाश में मेघों

के साथ ही छिप जाती है[3]। कन्याएं मालाओं के लिये फूल चुनती हैं। महापुरुषों की वाणी में मिठास होती है। नदियों में कमलों पर भौंरे गूंजते थे। राजा जनक ने सीता के स्वयम्वर का सन्देशा अनेक देशों में भेजा। उद्योगी और बुद्धिमान पुरुषों को ही लक्ष्मी वरती है[4]। इन फूलों में से जो चाहते हो चुन लो। जयचन्द की पुत्री संयुक्ता ने पृथ्वीराज को अपना पति चुना। मनुष्य को अपनी आंखों की रक्षा यत्न पूर्वक करनी चाहिये। महर्षि कण्व ने शकुन्तला को जाने से पहले आशीर्वाद दिया। चन्द्रापीड़ ने अपने पूवजों के द्वारा उठाये हुये राज्य-भार को उठाया। मण्डनमिश्र के दरवाजे पर तोते[5] और मैनाएं[6] भी वेद पढ़ते थे। मनुष्य विपत्ति के लिये धन इकट्ठा करे। सज्जनों के गुणों का वर्णन वाणी से कैसे हो सकता है। वाणी ही राज दिलाती है[7] और वाणी ही कलह का कारण है। चन्द्र का प्रकाश शरद्-ऋतु मे[8] आनन्द देने वाला[9] होता है। सम्पत्ति में सज्जनों का मन बहुत कोमल होता है। शिशुपाल ने युधिष्ठिर से कहा कि मैं कृष्ण को कभी भी सवश्रेष्ठ नहीं मान सकता।

संकेतः— (१) समाप्नुवन्। (२) अवृणोत्। (३) निलीयते। (४) वृणोति। (५) शुकाः। (६) सारिकाः। (७) दापयति। (८) शरदि। (९) आह्लादकः।

एकोविंशः पाठः

हलन्त नपुंसकलिंग

तकारान्त जगत्=संसार

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वि०	जगत्	जगती	जगन्ति
सं०	हे जगत्	हे जगती	हे जगन्ति

शेष रूप बलवत् शब्द के समान।

सकारान्त मनस्=मन

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	मनः	मनसी	मनांसि
द्वि०	मनः	मनसी	मनांसि
सं०	हे मनः	हे मनसी	हे मनांसि

शेष रूप चन्द्रमस् शब्द के समान।

अन्नन्त नामन् =नाम

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
द्वि०	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
सं०	हे नाम	हे नाम्नी, नामनी	नामानि

शेष रूप आत्मन् शब्द के समान।

इन्नन्त भाविन्=किस्मत, होनहार

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	भावि	भाविनी	भावीनि
द्वि०	भावि	भाविनी	भावीनि
सं०	हे भावि	हे भाविनी	हे भावीनि

शेष रूप स्वामिन् शब्द के समान।

शब्द-कोष

वियत्	आकाश	पयस्	पानी	तमस्	अन्धेरा	जन्मन्	जन्म
महत्	बड़ा	रजस्	धूली	नभस्	आकाश	हेमन्	सोना
तपस्	तपस्या	वचस्	वचन	वयस्	आयु	वर्त्मन्	रास्ता
रक्षस्	राक्षस	शिरस्	सिर	कर्मन्	काम	चर्मन्	चमड़ा
						सद्मन्	घर

उदाहरण :—

(१) जल से कमल और कमल से जल शोभा पाता है।	(१) पयसा कमलं कमलेन च पयः शोभते।
(२) तपस्या से मन शांत होता है।	(२) तपसा चेतः शाम्यति।
(३) संसार में कई प्रकार के मनुष्य हैं।	(३) जगति नानाविधाः मनुष्याः सन्ति।
(४) तुम्हारा क्या नाम है ?	(४) किं ते नाम ?
(५) चमड़े को मत छू।	(५) चर्म मा स्पृश।

तनादिगण*

तन्=विस्तार करना (उभयपद)

परस्मैपद

	लट् लकार			लङ् लकार		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
म०	तनोषि	तनुथः	तनुथ	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
उ०	तनोमि	तनुवः, तन्वः	तनुमः, तन्मः	अतनवम्	अतनुव, अतन्व	अतनुम, अतन्म

	लोट् लकार			विधिलिङ् लकार		
प्र०	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
म०	तनु	तनुतम्	तनुत	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
उ०	तनवानि	तनवाव	तनवाम	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

*तनादिगण के धातुओं से परे 'उ' विकरण जोड़ा जाता है।

लृट् लकार

प्र०	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति
म०	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ
उ०	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

प्र०	तनुते	तन्वाते	तन्वते
म०	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
उ०	तन्वे	तनुवहे / तन्वहे	तनुमहे / तन्महे

लङ् लकार

अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
अतन्वि	अतनुवहि / अतन्वहि	अतनुमहि / अतन्महि ।

लोट् लकार

प्र०	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
म०	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
उ०	तनवै	तनवावहै	तनवामहै

विधिलिङ् लकार

तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

लृट् लकार

प्र०	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
म०	तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे
उ०	तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे

धातु-कोष

कृ=करना

लट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्	लृट्
करोति ,	अकरोत् ,	करोतु ,	कुर्यात् ,	करिष्यति
कुरुते ,	अकुरुत	कुरुताम् ,	कुर्वीत ,	करिष्यते

उदाहरण:—

(१) राजा अपना यश संसार में फैलाता है। (१) भूपतिः स्वयशो जगति तनोति।

(२) तू दूसरों की निंदा मत कर। (२) परेषां निन्दां मा कुरु।

(३) शिव ने प्रसन्न होकर अपने आप को प्रकट किया। (३) शिवः प्रसन्नो भूत्वा आत्मानम् आविष्करोति स्म।

(४) जो जैसा कर्म करेगा वैसा फल पायेगा। (४ यो यथा कर्म करिष्यति तथा फलं लप्स्यते।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

अंधेरे में जुगनू[१] चमकते हैं। जल से और सूर्य के तेज से[२] सब प्राणी जीते हैं। आकाश में बादलों के साथ बिजली चमकती है। थोड़े ही दिनों में रघु का यश सब जगह[३] फैल गया। वह कहेगा कि संसार में छल और कपट का ही राज है। अंधेरी[४] चल रही है। आकाश में धूली उड़ रही है। होनहार को कौन रोक सकता है? राम सोने के मृग के पीछे वन में गया। राजा शिवि ने बाज से[५] कबूतर को[६] बचाया और अपना यश संसार में फैलाया। भगवान् राम ने शिव के उस बड़े धनुष को तोड़ दिया।

राजा ने सोचा- "मैं ने इस राजपुत्र को घने अन्धेरे में[7] क्यों भेजा है"? मैं मानता हूं कि सब काम परिश्रम से ही सिद्ध होते हैं। सखियों ने फूलों के गहनों से शकुन्तला के शरीर को सजाया। राजा ने ईश्वर की स्तुति की और कहा- "भगवन्! कल मेरी मक्खी ने रक्षा की और आज मकड़ी ने[8]।" आयु प्रतिदिन क्षीण हो रही है। ईश्वर का भजन करो। भागीरथ ने अपने तप से ब्रह्मा को प्रसन्न किया। तप से मनुष्य का तेज बढ़ता है। गङ्गा का जल बहुत स्वादु और पवित्र है। सोने का खरापन और खोटापन आग में ही जाना जाता है। बहिरे ने[9] अपने मित्र से कहा- ईश्वर की कृपा से तुम्हारा बुखार[10] वैसे ही रहे।

संकेतः— (१) खद्योताः। (२) तेजसा। (३) सर्वत्र।
(४) झञ्झावातः, प्रवातः। (५) श्येनात्।
(६) कृपाणम्। (७) सूचीभेद्ये तमसि।
(८) ऊर्णनाभः। (९) बधिरः। (१०) ज्वरः।

विंशः पाठः

सर्वनाम शब्द (Pronoun)

सर्वनाम शब्दों का प्रयोग दो प्रकार से होता है। एक तो संज्ञा की पुनरुक्ति को दूर करने के लिये संज्ञा शब्दों के स्थान पर और दूसरे विशेषण के तौर पर संज्ञा शब्दों के साथ। संज्ञा (जिस के स्थान पर अथवा जिसके साथ सर्वनाम का प्रयोग हो) के अनुसार ही सर्वनाम का भी लिङ्ग और वचन रखा जाता है।

जैसे— सब लड़के=सर्वे बालकाः। सब कन्याएं=सर्वाः कन्याः, और सब फल=सर्वाणि फलानि इत्यादि।

सर्व, पूर्व, तद्, एतद्, यत्, इदम्, अदस्, युष्मद्, अस्मद्, किम् आदि मुख्य सर्वनाम† हैं।

सर्व=सब

पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वि०	सर्वम्	,,	सर्वान्
तृ०	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
च०	सर्वस्मै	,,	सर्वेभ्यः
प०	सर्वस्मात्	,,	,,
ष०	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
स०	सर्वस्मिन्	,,	सर्वेषु

†सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वि०	सर्वाम्	,,	,,
तृ०	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
च०	सर्वस्यै	,,	सर्वाभ्यः
प०	सर्वस्याः	,,	,,
ष०	,,	सर्वयोः	सर्वासाम्
स०	सर्वस्याम्	,,	सर्वासु

नपुँसक लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वि०	,,	,,	,,

शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान।

पूर्व, तद् एतद्, यत् और किम् शब्दों के रूप सर्व शब्द के समान ही बनते हैं। इनके प्रथमा विभक्ति के एकवचन में निम्नलिखित रूप होंगे :—

		पुँ०	स्त्री०	नपुँ०
पूर्व	पहला	पूर्वः	पूर्वा	पूर्वम्
तद्	वह	सः	सा	तत्
एतद्	यह	एषः	एषा	एतत्
यत्	जो	यः	या	यत्
किम्*	क्या, कौन	कः	का	किम्

*'कोई' 'कई' अथवा 'किसी' शब्दों का अनुवाद करते समय किम् शब्द के रूपों के साथ 'चित्' अथवा 'चन्' जोड़ दिया जाता है।

उदाहरण:—

(१) दरवाजे पर कौन २ है ?	(१) कः कोऽत्र द्वारि ?
(२) किसी स्त्री ने इन निधनों को बुलाया ।	(२) काचित् स्त्री एतान् निर्धनान् आह्वयत् ।
(३) ये सब फल उस लड़के को दो ।	(३) एतानि सर्वाणि फलानि तस्मै बालकाय यच्छ ।
(४) विदूषक ने कहा, इसका नाम मालविका है ।	(४) विदूषकोऽब्रवीत्— अस्य मालविका इति नाम अस्ति ।
(५) वह पुस्तक किस की है ?	(५) तत् पुस्तकं कस्यास्ति ?

रुधादिगण*

रुध्=रोकना या आक्रमण करना (उभयपद)

परस्मैपद

	लट् लकार			लङ् लकार		
प्र०	रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति	अरुणत्-द्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्
म०	रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध	अरुणः-त्-द्	अरुन्धम्	अरुन्ध
उ०	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म

	लोट लकार			विधिलिङ लकार		
प्र०	रुणद्धु	रुन्धाम्	रुन्धन्तु	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः
म०	रुन्धि	रुन्धम्	रुन्ध	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
उ०	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

*रुधादिगण में धातु से परे 'न' विकरण आता है ।

लृट् लकार

प्र०	रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति
म०	रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ
उ०	रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः

आत्मनेपद

	लट् लकार			लङ् लकार		
प्र०	रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते	अरुन्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
म०	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे	अरुन्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्
उ०	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि

	लोट् लकार			विधिलिङ् लकार		
प्र०	रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
म०	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
उ०	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि

लृट् लकार

प्र०	रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते
म०	रोत्स्यसे	रोत्स्येथे	रोत्स्यध्वे
उ०	रोत्स्ये	रोत्स्यावहे	रोत्स्यामहे

धातु कोष

भिद्=तोड़ना

लट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्	लृट्
भिनत्ति	अभिनत्	भिनत्तु	भिन्द्यात्	भेत्स्यति

छिद्=काटना

छिनत्ति	अछिनत्	छिनत्तु	छिन्द्यात्	छेत्स्यति

भुज्=खाना या भोगना या पालना

भुनक्ति	अभुनक्	भुनक्तु	भुञ्ज्यात्	भोक्ष्यति
भुङ्क्ते	अभुङ्क्त	भुङ्क्ताम	भुञ्जीत	भोक्ष्यते

युज्=जोड़ना, मिलाना

युनक्ति	अयुनक्	युनक्तु	युञ्ज्यात्	योक्ष्यति
युङ्क्ते	अयुङ्क्त	युङ्क्ताम	युञ्जीत	योक्ष्यते

उदाहरण :—

१. ग्वाला गाए को रोकता है।	१. गोपः गां रुणद्धि।
२. वह दस बजे अन्न खाता है।	२. स दशवादनकालेऽन्नं भुङ्क्ते।
३. पिता के राज्य को भोग।	३. पितृराज्यं भुगङ्धि।
४. प्रातः सायं चित्त को भगवान से जोड़े।	४. प्रातः सायं चित्तं भगवति युञ्ज्यात्॥
५. वह कुल्हाड़े से वृक्ष को काटता है।	५. स परशुना वृक्षं छिनत्ति॥

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

बुद्धिमान् केकड़े ने[1] बगुले का[2] सिर काट दिया। मछलियां इस से बहुत प्रसन्न हुईं। क्या वह उस लड़के का नाम जानता है? किसी नगर में एक कंजूस[3] रहता था। अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—"मैं इस मन को कैसे रोकूं यह बड़ा चञ्चल है"। उस समय वह कहां थी? राम ने सीता को वन में जाने से रोका पर उस ने न

माना। राजा ने कहा– "दरवाजे पर कौन है" ? वीरवर ने कहा– "क्या कोई उपाय है जिस से तुम फिर यहां रह सको" ? सारथि ने घोड़े को रथ में जोड़ दिया। पहले किसी वन में एक राक्षस रहता था। यह वही लड़की है जो हमें मार्ग में मिली थी। जो मनुष्य अपनी इन्द्रियों को वश में कर लेता है वह सुख पाता है। हमारे सब नेता देश की उन्नति के लिये कटिबद्ध हैं। खरगोश ने कहा कि वह शेर इस गुफा में रहता है। क्या आप उस अबला स्त्री की कुछ सहायता करेंगे। उस बिचारी का[४] पति मर गया है। सन्तान कोई नहीं है। कोई आश्रय भी नहीं है। ऐसी स्त्रियों की सहायता करना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है। परशुराम ने कुल्हाड़े से सहस्रबाहु का सिर काट दिया। कालिदास को भारत का शैक्सपियर कहते हैं। परन्तु वास्तव में उसकी कविता शैक्सपियर की अपेक्षा अधिक मनोहर है।

संकेत :– (१) कर्कटः। (२) बकस्य। (३) कृपणः। (४) वराकायाः।

एकविंशः पाठः

सर्वनाम शब्द (Contd.)

*इदम्=यह

पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	अयम्	इमौ	इमे
द्वि०	इमम्	,,	इमान्
तृ०	अनेन	आभ्याम्	एभिः
च०	अस्मै	,,	एभ्यः
प०	अस्मात्		,,
ष०	अस्य	अनयोः	एषाम्
स०	अस्मिन्	,,	एषु

स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	इयम्	इमे	इमाः
द्वि०	इमाम्	,,	,,
तृ०	अनया	आभ्याम्	आभिः

*इदमस्तु सन्निकृष्टं समीपवर्ति चैतदोरूपम्।
अदसस्तु विप्रकृष्टं तदिति परोक्षे विजानीयात्॥

इदम शब्द का प्रयोग पास वाली वस्तु में होता है। अदस् शब्द का प्रयोग दूर वाली वस्तु में होता है और तद् शब्द का प्रयोग अप्रत्यक्ष पदार्थ के लिए किया जाता है।

च०	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
प०	अस्याः	,,	,,
ष०	,,	अनयोः	आसाम्
स०	अस्याम्	,,	आसु

नपुँसक लिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	इदम्	इमे	इमानि
द्वि०	इदम्	इमे	इमानि

शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान

अदस् = वह

पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	असौ	अमू	अमी
द्वि०	अमुम्	,,	अमून्
तृ०	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
च०	अमुष्मै	,,	अमीभ्यः
प०	अमुष्मात्	,,	,,
ष०	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
स०	अमुष्मिन्	,,	अमीषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	असौ	अमू	अमूः
द्वि०	अमूम्	,,	,,
तृ०	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
च०	अमुष्यै	,,	अमूभ्यः

प०	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
ष०	,,	अमुयोः	अमूषाम्
स०	अमुष्याम्	,,	अमूषु

नपुँसक लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	अदः	अमू	अमूनि
द्वि०	अदः	अमू	अमूनि

शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान।

	युष्मद् = तू			अस्मद् = मैं		
प्र०	त्वम्	युवाम्	यूयम्	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वि०	त्वाम्	”	युष्मान्	माम्	”	अस्मान्
तृ०	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
च०	तुभ्यम्	”	युष्मभ्यम्	मह्यम्	”	अस्मभ्यम्
प०	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
ष०	तव	युवयोः	युष्माकम्	मम	आवयोः	अस्माकम्
स०	त्वयि	”	युष्मासु	मयि	”	अस्मासु

उदाहरणः—

(१) तू संस्कृत का पाठ आरम्भ कर।	(१) त्वं संस्कृतस्य पाठमारभस्व।
(२) क्या मैं अब घर जाऊं?	(२) किमहं सम्प्रति गृहं गच्छानि?
(३) उस वृक्ष पर कितने पक्षी हैं?	(३) अमुष्मिन् वृक्षे कति पक्षिणः सन्ति?
(४) तुम्हारा भाई कहां रहता है?	(४) तव भ्राता कुत्र वसति?
(५) उस ने मुझे पीठ पर घूंसा मारा।	(५) मुष्ट्या असौ मां पृष्ठे प्राहरत्।

क्र्यादिगण*

क्री = खरीदना (उभयपद)

परस्मैपद

	लट् लकार			लङ् लकार		
प्र०	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
म०	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उ०	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

	लोट् लकार			विधि लिङ्लकार		
प्र०	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
म०	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उ०	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

लृट् लकार

प्र०	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
म०	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उ०	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

* क्र्यादिगण के धातुओं से परे (ना) विकरण जोड़ा जाता है।

आत्मनेपद

लट् लकार				लङ् लकार		
प्र०	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
म०	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उ०	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

लोट् लकार				विधिलिङ् लकार		
प्र०	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
म०	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ०	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणावहै	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

लृट् लकार

प्र०	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
म०	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
उ०	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

धातु कोष

मुष् = चुराना

लट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्	लृट्
मुष्णाति	अमुष्णात्	मुष्णातु	मुष्णीयात्	मोषिष्यति

ग्रह् = लेना

गृह्णाति	अगृह्णात्	गृह्णातु	गृह्णीयात्	ग्रहीष्यति
गृह्णीते	अगृह्णीत	गृह्णीताम्	गृह्णीत	ग्रहीष्यते

ज्ञा = जानना

जानाति	अजानात्	जानातु	जानीयात्	ज्ञास्यति
जानीते	अजानीत	जानीताम्	जानीत	ज्ञास्यते

उदाहरण :—

(१) कितने मूल्य से तुम ने यह पुस्तक ली ? (१) कियता मूल्येन त्वयैं तत्पुस्तकं गृहीतम् ?

(२) उसने बाज़ार में आम खरीदे। (२) स आपणे आम्राणि अक्रीणात्।

(३) क्या तुम उस का नाम जानते हो ? (३) किं त्वं तस्याभिधानं जानासि ?

(४) किसी के भी धन को मत चुरा। (४) कस्यापि धनं मा मुषाण।

(५) इस बालक को पकड़। (५) एतं बालकं गृहाण।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

तब मैं क्रोध से उसे कहूँगा कि इस बालक को पकड़। मैं धर्म को जानता हूँ पर मेरी उस में प्रवृत्ति नहीं है। पुरानी पुस्तकें मत खरीदो ? वे शीघ्र फट जाती हैं। मैं ने बच्चों के लिये मिठाई खरीदी। ऋषियों ने संसार के तत्त्व को जाना और उसे उपनिषदों में[1] लिखा। लोग व्यापार के लिये कई वस्तुएं खरीदते और बेचते हैं[2]।

कभी भी पराई[३] वस्तु को मत चुराओ। माता पिता की कभी भी अवज्ञा मत करो[४]। गुरुओं की अवज्ञा करने वाले बालक कभी यश नहीं पाते। धर्म के तत्त्व को जानो और जान कर ग्रहण करो। महात्मा बुद्ध ने कहा- "सब नर-नारियों को सद्धर्म ग्रहण करना चाहिये"। कुणाल बोला- "मैं नहीं जानता कि किस लिये मेरी माता मुझ से नाराज है"। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से पूछा- "अर्जुन, क्या तुम ने मेरी बातों को सुना और समझा"। इस संसार में सब स्वार्थ के ही मित्र हैं। सच्चे मित्र बहुत कम होते हैं। जो मित्र के दुःख से दुःखी नहीं होते वे वास्तव में मित्र नहीं हैं। तुलसीदास ने ठीक कहा है कि धीरज, धर्म, मित्र और नारी की परीक्षा विपत्ति के समय ही होती है। सच्ची मित्रता कृष्ण और सुदामा में थी। राम ने मित्र धर्म का पालन किया और विभीषण को राज्य दिया। यह वही स्थान है जहां सीता और लक्ष्मण के साथ राम ठहरे थे। देवव्रत ने विवाह न करने की प्रतिज्ञा की[५]।

संकेत :— (१) उपनिषत्सु। (२) क्रीणन्ति विक्रीणन्ति च। (३) परकीयम्। (४) अवजानीयात, अवजानीध्वम्। (५) प्रत्यजानात्।

द्वाविंशः पाठः

संख्यावाचक शब्द (Numerals)

संख्यावाचक शब्द दो प्रकार के होते हैं—

(१) संख्यावाचक (Cardinals) और (२) पूरण (Ordinals)।

एक से चार तक संख्यावाचक शब्द तीनों लिङ्गों में भिन्न २ होते हैं। अतः विशेष्य के अनुसार ही उन का लिङ्ग और वचन रखा जाता है।

पूरणसंख्या बनाने के लिये एक को प्रथम, द्वि को द्वितीय, त्रि को तृतीय, चतुर् को चतुर्थ हो जाता है। पञ्चन् से दशन् तक पूरण संख्या बनाने के लिये 'म' जोड़ा जाता है। जैसे—पञ्चम, सप्तम, अष्टम आदि। विंशति आदि के दो २ रूप बनते हैं एक तो अन्त में 'तम' जोड़ कर और दूसरा 'ति' आदि का लोप करके। जैसे—विंशतितमः या विंशः।

सौ से अधिक संख्या के अनुवाद करने के लिये छोटी संख्या को पहले रख कर 'अधिक' या 'उत्तर' शब्द लगाया जाता है और फिर वही संख्या रक्खी जाती है। जैसे— ११२ के लिये "द्वादशोत्तरशतम्" या "द्वादशाधिकशतम्" रूप होगा।

दुगना, तिगुना, चारगुना आदि का अनुवाद करने के लिये संख्या वाचक शब्द के बाद 'गुण' शब्द जोड़ा जाता है। जैसे—द्विगुणं धनम् इत्यादि।

गणना

अङ्क	संख्यावाचक	पूरण		
		पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
१	एक	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
२	द्वि	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
३	त्रि	तृतीयः	तृतिया	तृतीयम्
४	चतुर्	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
५	पञ्चन्	पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चमम्
६	षष्	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
७	सप्तन्	सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
८	अष्टन्	अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
९	नवन्	नवमः	नवमी	नवमम्
१०	दशन्	दशमः	दशमी	दशमम्
११	एकादशन्	एकादशः	एकादशी	एकादशम्
१२	द्वादशन्	द्वादशः	द्वादशी	द्वादशम्
१३	त्रयोदशन्	त्रयोदशः	०शी	०शम्
१४	चतुर्दशन्	चतुर्दशः	०शी	०शम्
१५	पञ्चदशन्	पञ्चदशः	०शी	०शम्
१६	षोडशन्	षोडशः	०शी	०शम्

१७	सप्तदशन्	सप्तदशः	०शी	०शम्
१८	अष्टादशन्	अष्टादशः	०शी	०शम्
१९	नवदशन् एकोनविंशति	नवदशः एकोनविंशः एकोनविंशतितमः	०शी	०शम्
२०	विंशति	विंशतितमः विंशः	०मी ०शी	०मम् ०शम्
३०	त्रिंशत्	त्रिंशत्तमः त्रिंशः	०मी ०शी	०मम् ०शम्
४०	चत्वारिंशत्	चत्वारिंशत्तमः चत्वारिंशः	०मी ०शी	०मम् ०शम्
५०	पञ्चाशत्	पाञ्चशत्तमः पाञ्चशः	० मी ० शी	०मम् ०शम्
६०	षष्टि	षष्टितमः	०मी	०मम्
७०	सप्तति	सप्ततितमः	०मी	०मम्
८०	अशीति	अशीतितमः	०मी	०मम्
९०	नवति	नवतितमः	०मी	०मम्
१००	शतम्	शततमः	०मी	०मम्
१०००	सहस्रम्	सहस्रतमः	०मी	०मम्
१००००	अयुतम्	अयुततमः	०मी	०मम्
१०००००	लक्षम्	लक्षतमः	०मी	०मम्

† एक = एक				* द्वि=दो		
	पुंल्लिङ्ग	स्त्री०	नपुंसक०	पुंल्लिङ्ग	स्त्री०	नपुं०
प्र०	एकः	एका	एकम्	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वि	एकम्	एकाम्	"	"	"	"
तृ	एकेन	एकया	एकेन	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
च०	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै	"	"	"
प०	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्	"	"	"
ष०	एकस्य	"	एकस्य	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
स०	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्	"	"	"

---

†एक शब्द हमेशा एकवचन में होता है। यदि 'एक' शब्द 'कुछ' या 'कोई' अर्थ में सर्व नाम की तरह प्रयुक्त किया जाये तो उस के सब विभक्तियों और वचनों में रूप बनते हैं।

*द्वि शब्द नित्य द्विवचन में ही होता है।

	* त्रि = तीन			चतुर = चार		
	पुं०	स्त्री०	नपुं०	पुं०	स्त्री०	नपुं०
प्र०	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वि०	त्रीन्	"	"	चतुरः	"	"
तृ०	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
च०	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
प०	"	"	"	"	"	"
ष०	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
स०	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

उदाहरण :—

१ किसी नगर में चार मित्र रहते थे।	१ कस्मिँश्चित् नगरे चत्वारि मित्राणि प्रतिवसन्ति स्म।
२ अध्यापक ने तीन बालकों को दण्ड दिया।	२ अध्यापकः त्रीन् बालकान् अदण्डयत्।
३ उस ने दुगना धन पाया।	३ स द्विगुणं धनम् अलभत।
४ वह पाचवां बालक कौन है?	४ असौ पंचमो बालकः कोऽस्ति?
५ उस के पास एक सौ एक रूपये हैं।	५ तस्य सकाशे एकशतं रूप्यकाणि सन्ति।

* त्रि और चतुर् शब्द सदा बहुवचन में होते हैं।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

इस घर में दो मनुष्य, तीन बालक, चार कन्याएं और दो स्त्रियां रहती हैं। यह चौथा घोड़ा किस का है? राजा ने पांचों अपराधियों को दण्ड दिया। राजा दशरथ की तीन रानियां और चार पुत्र थे। गांधारी ने एक सौ पुत्रों को जन्म दिया। इस वृक्ष पर पूरे तीन सौ फल हैं। तुम्हें चार गुना [1] अधिक धन मिलेगा। कितने पुरुष वहां स्नान कर रहे हैं? पन्द्रह दिन का एक पक्ष होता है। पन्द्रहवें दिन चन्द्रमा पूर्ण हो जाता है। वेद चार हैं, शास्त्र छः हैं और पुराण अठारह हैं। पिता की आज्ञा से राम चौदह वर्ष बन में रहा। हमारे स्कूल में ४९५ विद्यार्थी पढ़ते हैं। २६ जनवरी, सन् १९५० को भारत में लोकराज्य स्थापित हुआ। दो और दो चार होते हैं। तुम्हारी श्रेणी में कितने छात्र पढ़ते हैं। मैं दस बजे वहां पहुँचूंगा। मैं इस मकान में चार साल से रह रहा हूँ। श्याम दास ने मांगने वाले को [2] तीन आने दिये। भगवान् कृष्ण ने छोटी आयु में ही हज़ारों राक्षसों को मार दिया। सप्ताह में सात दिन होते हैं और महीने में तीस। इन तीनों कन्याओं में से किस को इनाम दूं। उस ने सन् १९४९ में एम. ए. की परीक्षा पास की। और प्रान्तभर में प्रथम रहा।

सङ्केत :— (१ चतुर्गुणम्। (२) याचकाय।

त्रयोत्रिंशः पाठः

विशेषण और तारतम्य बोधक प्रत्यय ।

(Adjective & Degrees of comparison)

जो विशेष्य के गुण, अवस्था, संख्या या तुलना आदि को प्रकट करे उसे विशेषण कहते हैं। जैसे कृष्णः सर्पः, कृष्णा गौः आदि। सर्वनाम और विशेषण शब्दों का विशेष्य के अनुसार ही प्रयोग होता है। तथा विभक्ति, लिङ्ग और वचन भी विशेष्य के अनुसार ही रहते हैं।

जब दो वस्तुओं या व्यक्तियों में से किसी एक की दूसरे से उत्कृष्टता दिखानी हो तो तुलनावाचक 'तर' प्रत्यय जोड़ा जाता है। उसे स्त्रीलिङ्ग में 'तरा' और नपुंसकलिंग में 'तरम्' हो जाता है। जैसे प्रियतरः, प्रियतरा, प्रियतरम् इत्यादि।

जब सब में से किसी एक की उत्कृष्टता दिखानी हो तो अतिशयवाचक 'तम' लगाया जाता है। उसे स्त्रीलिङ्ग में 'तमा' और नपुंसकलिंग में 'तमम्' हो जाता है। जैसे– प्रियतमः, प्रियतमा, प्रियतमम् इत्यादि।

क्रिया और अव्ययों के साथ इसी अर्थ में 'तराम्', 'तमाम्' और 'तर', 'तम' क्रम से जोड़े जाते हैं। जैसे— पठतितराम्, पठतितमाम् नीचैस्तर नीचैस्तम आदि।

तुलना में 'तर' और 'तम' के स्थान पर 'ईयस्' और 'इष्ठ' प्रत्यय भी लगते हैं। जैसे— प्रिय से प्रेयस और प्रेष्ठ रूप बनते हैं। नीचे ईयस् और इष्ठ प्रत्ययान्त रूप दिये जाते हैं।

Positive Degree	Meaning	(तुलना वाचक) Comparative Degree	(अतिशयवाचक) Superlative Degree
अन्तिक	निकट	नेदीयस्	नेदिष्ठ
अल्प	थोड़ा	अल्पीयस्	अल्पिष्ठ
दूर	दूर	दवीयस्	दविष्ठ
दीर्घ	लम्बा	द्राघीस्	द्राघिष्ठ
प्रिय	प्यारा	प्रेयस्	प्रेष्ठ
स्थूल	मोटा	स्थवीयस	स्थविष्ठ
गुरु	भारी	गरीयस	गरिष्ठ
बहु	बहुत	भूयस	भूयिष्ठ
वृद्ध	बूढ़ा	वर्षीयस् } ज्यायस्	वर्षिष्ठ } ज्येष्ठ
युवन्	युवक	यवीयस } कनीयस	यविष्ठ } कनिष्ठ
महत्	बड़ा	महीयस	महिष्ठ
ह्रस्व	छोटा	ह्रसीयस्	ह्रसिष्ठ
बलिन्	बलवान्	बलीयस	बलिष्ठ

उदाहरण :—

१. मोहन सब बालकों में से चतुर है।	१. मोहनः सर्वेषु बालकेषु पटुतमः अस्ति ॥
२. वह मुझ से बलवान है	२. स मत्तः बलवत्तरः अस्ति ॥
३. हिमालय सब पर्वतों से ऊंचा है।	३. हिमालयः सर्वेषु पर्वतेषु उच्चैस्तमः अस्ति ॥
४. लव कुश का छोटा भाई था।	४. लवः कुशस्य कनीयान् भ्राता आसीत्
५. राम सब भाईयों में बड़ा था।	५. रामः सर्वेषु भ्रातृषु ज्येष्ठोऽवर्तत ॥

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

यह पुस्तक उस पुस्तक से अच्छी है[1]। अर्जुन दुर्योधन से अधिक वीर था। दशरथ के चारों पुत्रों में राम सब से बड़ा था। काला घोड़ा सब घोड़ों से तेज भागता है। देखो, इन में सब से सुन्दर तस्वीर[2] कौनसी है? जो सब से अधिक नम्बर लेगा उसे इनाम मिलेगा। दशरथ की पत्नियों में से कौशल्या सब से बड़ी और कैकेयी सब सब से छोटी थी। यह सन्दूक[3] उस सन्दूक से हलका है। नदियों में गङ्गा सब से पवित्र है। रावण ने सोचा कि मारीच सब से अधिक चालाक है, इस लिये उसे ही अपना सहायक बनाऊं। कुम्भकर्ण सब राक्षसों से अधिक खाता था और सब से अधिक सोता था। वह सब से मोटा बालक कौनसी श्रेणी में पढ़ता है? यह वृक्ष बाग के सब वृक्षों में से ऊंचा है। कुन्ती ने कर्ण से कहा—"कर्ण! तुम मेरे सब से बड़े पुत्र हो"। भारतवर्ष सब देशों से सुन्दर देश है। मोहन की गाय मेरी गाय से अधिक दूध देती है। विजय कुमार सब से अधिक शर्मीला लड़का है। भीम पाण्डवों में सब से अधिक बल वाला था। क्या तुम जानते हो कि सब से अधिक धनवती कौनसी स्त्री है? मारने वाले से रक्षा करने वाला बलवान होता है। कमला सब लड़कियों में से चतुर है।

संकेतः— (१) श्रेयः। (२) चित्रम्। (३) मञ्जूषा, पेटिका।

चतुर्विंशः पाठः

अव्यय (Indeclinables)

अव्यय उन शब्दों को कहते हैं जो सब लिङ्गों में, सब विभक्तियों में और सब वचनों में एक समान ही रहते हैं। वे कभी नहीं बदलते। अव्यय क्रियाविशेषण आदि के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं।

अत्र	यहां
तत्र	वहां
यत्र	जहां
कुत्र	कहां
सर्वत्र	सब जगह
इह	यहां
अधुना	अब
सम्प्रति	अब
साम्प्रतम्	अब
तदा	तब
कदा	कब
यदा	जब
यथा	जैसे
तथा	वैसे
पश्चात्	बाद
अन्तरेण	बिना
पृथक्	अलग
प्रायः	बहुधा
कथम्	कैसे
यतः	क्योंकि
अतः	इस लिये
इत्थम्	ऐसे
इव	समान
अद्य	आज
ह्यः	कल (बीता हुआ)
श्वः	कल (आने वाला)
यावत्	जब तक
तावत्	तब तक
एव	ही
एवम्	ऐसे
अपि	भी
प्रातः	प्रातःकाल
नक्तम्	रात को
ऋते	बिना
सुष्ठु	अच्छा
सहसा	अचानक

पुनः	फिर
भूयः	फिर, अधिक
शनैः	धीरे
सर्वथा	सब तरह से
सर्वदा	हमेशा
च	और
चेत्	यदि
इति	यह
इदानीम्	अब
तदानीम्	तब
ततः	उसके बाद
तथापि	फिर भी
धिक्	धिक्कार
साक्षात्	आंखों के सामने
सकृत्	एक बार

सायम्	शाम को
समीप	पास
साकम्, साधम्, समम्, सह	साथ
शीघ्रम्	जल्दी
वृथा	व्यर्थ
वा	अथवा
विना	विना
कुतः	कहां से
नीचैः	नीचे
उच्चैः	ऊंचे
शश्वत्	निरन्तर
नूनम्	निश्चय से
ध्रुवम्	निश्चय से
असकृत्	अनेक बार
स्वयम्	अपने आप
युगपद्	एक दम

उदाहरणः-

१. ज्ञान के विना मुक्ति नहीं।	१. ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः॥
२. राम! तू विनय से खूब शोभा पाता है।	२. राम! सुष्ठु शोभसे विनयेन
३. दुःख के विना सुख कहां?	३. कुत्र दुःखमन्तरेण सुखम्?

४. जैसा तू करेगा वैसा फल पायगा।	४. यथा करिष्यसि तथा फलं लप्स्यसे ॥
५. आज आप यहां ही ठहरें।	५. अद्य भवान् अत्रैव तिष्ठतु ॥

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

राम और लक्ष्मण के बीच[१] सीता चल रही थी। परिश्रम के बिना विद्या कभी नहीं आती। तुम्हारे बाद उस की बड़ी दुर्गति होगी। जब राजा बार बार[२] मांस काट कर मांस से रहित[3] हो गया तब बाज के मन की तृप्ति के लिये स्वयं तराजू पर चढ़ गया[४]। "मैं चाहती हूं कि हम फिर पवित्र गङ्गा में स्नान करें" यह सीता ने राम से कहा। जब २ धर्म पर विपत्ति आती है तब २ ईश्वर अवतार लेता है। मीरा ने मन्दिर में साक्षात् भगवान् कृष्ण को देखा। महात्मा गान्धी ने अपने मित्र को लिखा– "भई, मेरे लिये तो लोक-सेवा ही ईश्वर भजन है"। उस स्त्री ने जरा भी लज्जा न की। मारीच बोला– "राम की पत्नी सीता जलती हुई आग की लपटों के[५] समान है। तू उस का अनादर नहीं कर सकता"। अरे छात्रो! तुम यहां क्या करते हो? तुम्हारी परीक्षा कब है? मोहन अब कहां से[६] आया है? सदा सच बोलना अच्छा है। बिना परिश्रम के भाग्य भी सिद्ध नहीं होता। अब रोना व्यर्थ है। जब तक वर्षा न होगी किसान प्रसन्न न होंगे। मैं आज रात को सिनेमा[७] देखूंगा। तू ने कल पान[८] नहीं खाया। अचानक ही ठण्डी २ पवन चलने लगी। यदि आप फिर ऐसा करेंगे तो अच्छा[९] न होगा।

संकेत :— (१) अन्तरा। (२) असकृत्। (३) निर्मांसः। (४) तुलामारोहत्। (५) शिखाः। (६) कुतः। (७) चलचित्रम्, चित्रपटम्। (८) ताम्बूलम्। (९) शोभनम्।

पंचविंशः पाठः

कारक प्रकरण*

संस्कृत में अनुवाद के लिये विभक्तियों का ठीक २ प्रयोग समझना नितान्त आवश्यक है। विभक्ति दो प्रकार की होती है— कारक विभक्ति और उपपद विभक्ति। जो विभक्ति किसी क्रिया के सम्बन्ध से लगाई जाये उसे कारक विभक्ति कहते हैं। जैसे— रामो रावणं हन्ति। यहां राम की विभक्ति (प्रथमा) का सम्बन्ध क्रिया के साथ है। तथा जो विभक्ति किसी समीपवर्ती पद के प्रभाव से लगाई जाये उसे उपपद विभक्ति कहते हैं। जैसे—नमः शिवाय। यहां नमः के योग से 'शिवाय' पद में चतुर्थी विभक्ति है।

प्रथमा (Nominative)

(१) यदि क्रिया का प्रयोग कर्ता के लिये हो तो कर्ता से प्रथमा विभक्ति आती है और कर्म से द्वितीया। और यदि क्रिया का प्रयोग कर्म के लिये हो तो कर्म से प्रथमा और कर्ता से तृतीया विभक्ति आती है।

जैसे— "सः स्वामिनं सेवते" (Active Voice)। यहां क्रिया का प्रयोग कर्ता के लिये है। और "तेन स्वामी सेव्यते" (Passive Voice) यहां क्रिया का प्रयोग कर्म के लिये है।

(२) सम्बोधन अर्थ में भी प्रथमा विभक्ति आती है।

जैसे— हे कृष्ण।

---

*संस्कृत भाषा में कारक छः हैं। कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण। षष्ठी को कारक नहीं माना जाता क्योंकि षष्ठी किसी कारक के ही सम्बन्ध को बताती है।

द्वितीया (कर्म—Accusative)

(क) १. सकर्मक धातुओं के कर्म में द्वितीया विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे— "कृष्णः अर्जुनं कथयति"।

२. गत्यर्थक धातुओं के प्रयोग में कर्म में द्वितीया या चतुर्थी आती है। जैसे— "स ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति"।

३. अधि+शी, अधि+स्था, अधि+आस्, उप+वस्, अनु+वस्, अधि+वस्, आ+वस्, उपसर्ग-पूर्वक क्रुध् और द्रुह्—इन धातुओं के प्रयोग में कर्म में द्वितीया विभक्ति आती है।

४. †द्विकर्मक धातुओं के मुख्य तथा गौण कर्म में (दोनों जगह) द्वितीया विभक्ति आती है।

(ख) द्वितीया उपपद इन शब्दों के योग में आती है:—

अभितः, परितः, उभयतः, सर्वतः, समया, निकषा, हा, धिक्, प्रति, अधोऽधः, अध्यधि, उपर्युपरि, अन्तरा, अन्तरेण, विना इत्यादि।

उदाहरण :—

(१) वह घर जा रहा है।	(१) स गृहं गच्छति।
(२) वह आसन पर बैठता है।	(२) स आसनमधितिष्ठति।
(३) ग्वाला गाय का दूध दोहता है।	(३) गोपः गां दुग्धं दोग्धि।
(४) मन्दिर के चारों ओर जल था।	(४) मन्दिरम् अभितः जलम् आसीत्।
(५) यह पथिक इन्द्र-प्रस्थ की ओर जा रहा है।	(५) एषः पथिकः इन्द्रप्रस्थं प्रतिगच्छति।

---

†द्विकर्मक धातु ये हैं— दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मन्थ्, मुष्, नी, हृ, कृष् और वह्।

(६) धिक्कार है उसे जो गुरुओं की निन्दा करता है।	(६) धिक् तं यो गुरून् निन्दति।
(७) कितनी देर तक वह यहां रहेगा ?	(७) कियन्तं कालमसौ अत्र स्थास्यति ?

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो —

मैं ने उस से घर का मार्ग पूछा। सड़क के दोनों ओर[1] सिपाही खड़े थे। काशी के समीप[2] गङ्गा बहती है। आज मैं अमृतसर जाऊँगा। दुष्ट सदा सज्जनों को तङ्ग करते हैं। विद्या के बिना ज्ञान कहां और शान्ति के बिना सुख कहां ? कृष्ण के चारों ओर ग्वाले खड़े थे। धिक्कार है ऐसे पुत्र को जो माता पिता की आज्ञा नहीं मानता। तब वे मूर्ख पण्डित गांव की ओर चल दिये[3]। मोहन और कृष्ण के बीच उनकी बहिन खड़ी है। नौकर ने स्वामी के सौ रुपये चुराये। वेदों की निन्दा करने वाले को धिक्कार। भगवान् भक्तों के दुःख को अपना दुःख मानते हैं। श्रीवत्स वृक्ष की छाया में विश्राम करने के लिये शिला पर बैठ गया[4]। विशाखदत्त ने देखा कि राजा के चारों ओर सेवक खड़े थे। इस बाग़ के चारों ओर आम के वृक्ष हैं। मैं चाहता हूं कि तू अब घर जाये ! धनी लोग गरमियों में पहाड़ों पर रहते हैं। पर्वत के ऊपर ऊपर[5] मेघ हैं और मेघों के नीचे नीचे[6] पक्षी उड़ रहे हैं। जज ने चोर को सौ रुपये दण्ड दिया।

संकेत :— (१) उभयतः। (२) निकषा। (३) प्रस्थिताः। (४) शिलामध्यास्त। (५) उपर्युपरि। (६) अधोऽधः।

— —

षड्विंशः पाठः

कारक प्रकरण (Contd)

तृतीया (करण- Instrumental)

(क) १. जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को सिद्ध करे उसे करणकारक कहते हैं। करणकारक में तृतीया विभक्ति आती है। जैसे—"वह डण्डे से कुत्ते को पीटता है = स दण्डेन कुक्कुरं ताडयति" इत्यादि।

२. कर्मवाच्य तथा भाववाच्य का कर्ता तृतीया विभक्ति में होता है। जैसे :— "रामेण पुस्तकं पठ्यते" और "देवेन भूयते" इत्यादि।

३. यान (conveyance) जिस पर बैठ कर कहीं जाया जाये, उस में भी तृतीया विभक्ति आती है। जैसे :—"स अश्वेन याति" इत्यादि।

(ख) तृतीया उपपद निम्नलिखितों के सम्बन्ध में प्रयुक्त होती है :- साकम्, समम्, सार्धम्, सह, निषेधार्थक अलम् और कृतम्, शरीर के जिस अङ्ग में विकार हो, जिस चिह्न से किसी की, पहचान हो, प्रकृति, व्याज, बुद्धि आदि शब्दों के योग में, और किम्, कार्यम्, प्रयोजनम्, अर्थः, गुणः, हीन, न्यून, रहित, सदृश, तुल्य, आदि शब्दों के योग में।

उदाहरण :—

(१) जल से शरीर शुद्ध होता है। (१) जलेन शरीरं शुध्यति।

(२) गौतम रथ पर वन को गया। (२) गौतमो रथेन वनमगच्छत्।

(३) लक्ष्मण भाई के साथ वन को गया।	(३) लक्ष्मणो भ्रात्रा सह वनमगच्छत्।
(४) महापुरुष जिस रास्ते पर चलते हैं वही ठीक है।	(४) महाजनो येन गतः स पन्थाः।
(५) तू किस प्रयोजन से यहां घूम रहा है?	(५) त्वं केन प्रयोजनेनात्र भ्रमसि?
(६) अधिक विवाद बन्द करो।	(६) अलमधिक-विवादेन।
(७) गाय का दूध स्वभाव से ही मीठा होता है।	(७) भवति प्रकृत्या मधुरं गोः पयः।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करोः—

वह पांव से लङ्गड़ा[1] है और आंख से काना[2]। स्वभाव से ही स्त्रियों का हृदय कोमल होता है। क्या तुम्हें अपने आप से भी लज्जा नहीं आती? ब्रह्मचर्य और तपस्या से राजा राष्ट्र की रक्षा करता है। वह स्वभाव से ही सिंह के समान वीर था। व्याकरण बारह बरस[3] में पढ़ा जाता है। तुम्हारे समान और कौन है? सीता अपने पति राम के साथ वन को गई। यह घोड़ा तुम ने कितने मूल्य[4] से खरीदा? धर्म से रहित पुरुष पशुओं के समान होता है। कभी तिनके से भी[5] काम पड़ जाता है। तुम्हारे बिना मैं अकेला वहां कैसे जाऊं? अब तो उसका वियोग नहीं सहारा जाता।

विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण मिथिला नगरी को गये। आजकल लोग रेल गाड़ी[6] से इधर उधर[7] आते जाते हैं। उस धन से क्या लाभ जिसका उपयोग नहीं होता। किसी न किसी उपाय

से मनुष्य को बुद्धिमान् बनना चाहिये। यात्रियों ने नाव के द्वारा नदी को पार किया। विद्या के समान कोई धन नहीं है। भाई, परिश्रम के बिना कोई काम भी सिद्ध नहीं होता। लज्जा मत करो, इसे अपना ही घर समझो। वह इतना दुबल हो गया है कि कठिनता से पहिचाना जाता है^८।

सङ्केतः—(१) अज्ञः (२) काणः (३) द्वादशभिः वर्षैः। (४) कियता मूल्येन। (५) तृणेनापि। (६) बाष्पशकट्या। (७) इतस्ततः (८) प्रत्यभिज्ञायते।

सप्तविंशः पाठः

कारक प्रकरण (Contd)

चतुर्थी (सम्प्रदान—Dative)

(क) १. जिसे कुछ दिया जाय या जिसके लिये कुछ किया जाय उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान कारक में सदा चतुर्थी विभक्ति आती है। जैसे—"स निधनेभ्यो धनं ददाति" इत्यादि।

२. रुच् (चाहना) या स्वद् अर्थ वाले धातुओं के योग में चतुर्थी आती है। जैसे—"बालकाय रोचते मोदकः" इत्यादि।

३. स्पृह् (चाहना) धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति आती है। जैसे—"स पुष्पेभ्यः स्पृह्यति" इत्यादि।

४. क्रुध्, द्रुह्, असूय्, ईर्ष्य्, इन धातुओं के योग में जिस व्यक्ति के प्रति क्रोध आदि हो, उस से चतुर्थी विभक्ति आती है।

५. प्रति+श्रु, आ+श्रु धातुओं के योग में, मांगने पर जिस व्यक्ति को कुछ देने का वचन दिया जाय उससे चतुर्थी आती है।

६. कथ्, ख्या, शंस्, चक्ष्, नि + विद् (णिजन्त) के योग में जिसे कुछ कहा जाय, उस से चतुर्थी आती है

७. तद्यारी के अर्थ में, तुम् प्रत्यय के अर्थ में और प्रयोजन अर्थ में भी चतुर्थी आती है।

(ख) चतुर्थी उपपद निम्नलिखित के सम्बन्ध में प्रयुक्त होती है:--

नमः स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा अलम् (पर्याप्त), वषट्, समर्थ, शक्त, प्रभु आदि के योग में।

उदाहरण:–

१. प्यासे को पानी दे।	१. तृषिताय जलं देहि।
२. रावण ने राम पर क्रोध किया।	२. रावणो रामाय अकुप्यत्।
३. देवदत्त ब्राह्मण को गाय देने की प्रतिज्ञा करता है!	३. देवदत्तो विप्राय गां प्रतिशृणोति॥
४. उसने मेरे सौ रुपये देने हैं।	४. स मे शतं धारयति॥
५. अपने दिल की बात मैं किसे कहूँ।	५. कस्मै कथयामि मनोगतम्॥
६. अब तो खाने के लिये कुछ दो।	६. सम्प्रति तु आहाराय किञ्चिद् देहि॥
७. भगवान् वासुदेव को नमस्कार।	७. नमो भगवते वासुदेवाय॥
८. मैं विश्राम करने के लिये बाग को जाता हूँ।	८. विश्रामायोपवनं गच्छामि॥

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

दीनों की विपत्ति दूर करो। भगवती सरस्वति को नमस्कार। संसार के बनाने वाले[1], रक्षा करने वाले[2] और नाश करने वाले[3] को नमस्कार। तुम ने उसके कितने रुपये देने हैं। राम ने ऋषियों को रावण को शीघ्र ही मार देने का वचन दिया[4]। पता नहीं क्यों आज मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता[5]। राजा ने युद्ध के लिये तय्यारी की। पहलवान[6] दूसरे पहलवान से[7] ईर्ष्या करता है। तू व्यर्थ ही क्यों उस पर नाराज़ हो रहा है? तुम ही बताओ कि मैं अपना भेद किसे बताऊं? माली[8] फलों के लिये बाग को जायगा। भूखों को अन्न देना चाहिये और नंगों को कपड़े। महात्मा गांधी ने देश के लिये बहुत क्लेश सहे। दूसरे नेताओं ने भी स्वतन्त्रता के लिये बहुत यत्न किया। भक्तसिंह ने देश के लिये प्राण भी न्योछावर कर दिये। सुख और समृद्धि की किसे चाह नहीं होती[9]? सेवक ने राजा से निवेदन किया कि वह तपस्वी द्वार पर खड़ा है। गुरुओं के कटु उपदेश भी अन्त में शिष्यों के कल्याण के लिये ही होते हैं। काव्य यश और धन के लिये होता है। राजा नल तब विश्राम करने के लिये एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। मुझे आशा है कि तुम उस की रक्षा करने में समर्थ हो। धर्म कल्याण के लिये होता है और पाप सर्वनाश के लिये। अपने देश की रक्षा के लिये सब कुछ करना चाहिये।

संकेत :— (१) निर्मात्रे, रचयित्रे। (२) रक्षित्रे। (३) संहर्त्रे। (४) प्रत्यश्रृणोत्। (५) न रोचते। (६) मल्लः। (७) प्रतिमल्लाय। (८) मालाकारः। (९) न स्पृह्यति।

अष्टाविंशः पाठः

कारक प्रकरण (Contd)

पंचमी (अपादान— Ablative)

(क) १. जिस स्थान, वस्तु और व्यक्ति से किसी वस्तु या व्यक्ति का वियोग पाया जाए, उसे अपादान कहते हैं। अपादान में पंचमी विभक्ति आती है। जैसे :- 'स वृक्षात् पतति' इत्यादि।

२. जिस से भय हो अथवा जिस से रक्षा की जाए उसमें पंचमी होती है। जैसे :— 'स सिंहात् बिभेति', 'प्रभो! मां पापात् रक्ष' इत्यादि।

३. जिस से किसी की उत्पत्ति हो उस में पंचमी होती है। जैसे :— 'मातुः पुत्रो जायते' इत्यादि।

४. जिस से छिपा जाए, जिससे कुछ सीखा, जाना या सुना जाए, जिस से उद्वेग या लज्जा हो, जिस से दूसरे की उत्कृष्टता दिखाई जाये, उस में पंचमी विभक्ति आती है।

५. जुगुप्सा, विराम और प्रमाद आदि अर्थ वाले शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति आती है।

(ख) पञ्चमी उपपद का प्रयोग निम्नलिखितों के संबन्ध में होता है :- अन्य, पर, भिन्न, इतर, अन्यत्र, आरात्, ऋते, प्रभृति, आरभ्य, वहिः, ऊर्ध्वम्, परम्, अनन्तरम् और काल या दिशा के संबन्ध में प्रयुक्त हुये प्राक्, प्रत्यक् आदि दिशासूचक शब्दों के योग में।

'पृथक्' और 'विना' के योग में द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी होती है।

उदाहरण :—

(१) वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।	(१) वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
(२) स्त्रियों ने खिड़कियों से सिद्धार्थ को देखा।	(२) स्त्रियो वातायनेभ्यः सिद्धार्थमपश्यन्।
(३) ज्ञान के विना मुक्ति कहां ?	(३) कुतो ज्ञानात् ऋते मुक्तिः ?
(४) गांव से पूर्व दिशा में एक कदम्ब का वृक्ष है।	(४) ग्रामात् पूर्वस्यां दिशि वर्तते एकः कदम्बतरुः।
(५) हे ईश्वर ! हमें पाप से बचा।	(५) ईश्वर ! अस्मान् पापान् रक्ष।
(६) स्वाध्याय से प्रमाद मत कर।	(६) स्वाध्यायान्मा प्रमदः।
(७) किसान जौ से बैल को हटाता है।	(७) कृषको यवेभ्यो बलिवर्दं वारयति।
(८) गङ्गा हिमालय से निकलती है।	(८) गङ्गा हिमालयात् प्रभवति।
(९) काम से क्रोध पैदा होता है।	(९) कामात् क्रोधोऽभिजायते।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

ऋषि कुमार आश्रम में आए। लड़कियां खिड़कियों से[1] बरात को[2] देखती हैं। मुनि ने अपनी तपस्या के प्रभाव से चुहिया को कन्या बना दिया। अरे धर्मरक्षित ! देखो इस आश्रम से कैसी सुन्दर हवन की सुगन्धि आ रही है। ये ऋषि लोग पाप से बहुत डरते हैं। बहू ससुर से लज्जा करती है। गांव के पास ही एक नदी बहती थी। कालिदास छत से नीचे काली के मन्दिर में गिरा। ऋणी मनुष्य[3] साहूकार[4] से छिपता है। राजकुमारों ने

विष्णुशर्मा से राजनीति सीखी। पाण्डव और कौरव गुरु द्रोणाचार्य से पढ़ते और शस्त्रविद्या सीखते थे। घड़ा मिट्टी का बनता है और गहने सोने के। अर्जुन! क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए तुम्हें युद्ध से मुंह नहीं मोड़ना चाहिये"। दोनों पथिक शेर की गर्ज से डर गये। मेरा भाई पढ़ने से कतराता है[६]। कहने से करना अच्छा होता है। सीता जन्म से ही दुःख भोगती रही। कल से लेकर मैं फिर पाठशाला जाया करूँगा। बताओ उस के बाद क्या हुआ? उस के बाद लक्ष्मीबाई वधू बन कर झांसी में आई। मथुरा वाले पाटलीपुत्र वालों से अधिक धनवान् हैं। आप का घर इस स्थान से कितनी दूर है? स्वाध्याय से और प्रवचन से कभी प्रमाद नहीं करना चाहिये। कुत्ते ने कहा कि चोरों से घर की रक्षा अवश्य करनी चाहिये।

संकेत :— [१] वातायनेभ्यः, गवाक्षेभ्यः। [२] वरयात्राम्। [३] अधमर्णः। [४] उत्तमर्णात्। [५] न निवर्तितव्यम्। [६] पराजयते।

——

एकोनत्रिंशः पाठः

कारक प्रकरण (Contd)

षष्ठी (सम्बन्ध— Genitive)

१. एक वस्तु या व्यक्ति का दूसरे के साथ कोई संबन्ध हो तो वहा षष्ठी का प्रयोग होता है। जैसे :— 'मम पुस्तम्, तव गृहम्' इत्यादि।

२. यदि दोनों के मध्य में भेद बताना अभिप्रेत हो तो षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे—"एतावानस्ति भवतस्तस्य च भेदः" इत्यादि।

३. दूर और समीप अर्थ वाले शब्दों के योग में पञ्चमी और षष्ठी दोनों विभक्तियां प्रयुक्त होती हैं। जैसे—"ग्रामाद् ग्रामस्य वा दूरम्" इत्यादि।

४. तुल्यार्थक शब्दों के योग में तृतीया या षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे—'तेन तस्य वा तुल्यं मुखम्' इत्यादि।

५. वर्तमान काल बोधक क्तान्त का कर्ता षष्ठी में होता है। जैसे—"कस्य न विदितमिदम्" आदि।

६. कृदन्त के अनुक्त कर्ता और अनुक्त कर्म में षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे—"कृष्णस्य कृतिः, जगतः कर्ता कृष्णः" आदि।

७. हेतु शब्द के योग में भी षष्ठी आती है। जैसे—"कस्य हेतोः"।

८. अप+कृ, उप+कृ अनु+कृ, प्र+भू, ईश्, स्मृ, तृप् आदि धातुओं का कर्म भी षष्ठी में हो सकता है।

उदाहरण :—

१. राम का घोड़ा खेत में चरता है।	१. रामस्याश्वः क्षेत्रे चरति।
२. बुद्धिमानों के लिये कुछ भी असाध्य नहीं है।	२. बुद्धिमतां किञ्चिदपि असाध्यं नास्ति।
३. स्वाधीन और अपराधीन लोगों में बहुत बड़ा भेद होता है।	३. स्वाधीनानां पराधीनानाञ्च महान् भेदो भवति।
४. अन्न के लिये लोग गांव २ घूमते हैं।	४. अन्नस्य हेतोः लोकाः ग्रामाद् ग्रामं भ्राम्यन्ति।
५. पिता की आज्ञा से राम बन को गया।	५. पितुराज्ञया रामो वनमगच्छत्।
६. मैं ने उसका क्या अपकार किया?	६. किं मया तस्यापकृतम्।
७. राम के समान संसारमें कोई पुत्र नहीं।	७. रामस्य तुल्यो नास्ति जगति कोऽपि सुतः।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

राजा के सिपाही बन में फिरते हैं। किस को मालूम नहीं कि हिमालय सब से ऊंचा पर्वत है। पुरुष चोर और सांप के नाम से ही डर जाता है। पाठशाला के समीप ही आर्यसमाज – मन्दिर है जहाँ हर रवि वार को सत्सङ्ग होता है। उन दोनों भाईयों का आपस

में आकाश पातालका का अन्तर[1] है। किस कारण तुम ने वहां इतनी देर लगाई ? अभिज्ञान-शाकुन्तल कालीदास की सर्वश्रेष्ठ रचना है। भगवान् कृष्ण का कथन है कि आत्मा कभी नहीं मरती। गङ्गा का जल बहुत मधुर, शीतल और निर्मल होता है। बुरे आदमियों से किस को डर नहीं होता ? सम्पत्ति और विपत्ति में बड़े आदमियों का मन एक समान ही रहता है[2]। अरे क्या मेरा अपने नौकरों पर भी प्रभाव नहीं है ? भरत के समान भाई कहां मिल सकता है ? स्वतन्त्र भारत में अब काले और गोरे का भेद बिल्कुल[3] मिट गया है। जिन के पास न विद्या, न तप, न शील, न गुण और न ही धर्म है वे संसार में पशु के समान हैं। भूषणों से स्त्रियों की तृप्ति नहीं होती। हमारे घर से पूर्व दिशा में बड़ा तालाब है। इस जले पेट के लिये[4] इतना बड़ा पाप कौन करे ? एक दिन एक लोहार लोहे की बनी हुई एक शनैश्चर की मूर्ति लाया।

सङ्केत :— (१) आकाशपातालयोरन्तरम्। (२) सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता। (३) सर्वथा। (४) दग्धोदरस्यार्थम्।

——

त्रिंशः पाठः

कारक प्रकरण (Contd)

सप्तमी (अधिकरण— Locative)

(क) १. कर्ता या कर्म जिस पर स्थित हों उसे आधार अथवा अधिकरण कहते हैं। अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति आती है। जैसे— 'तिलेषु तैलं भवति' इत्यादि।

२. निर्धारण में सप्तमी और षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे :— 'पशूनां पशुषु वा गौः श्रेष्ठा भवति' इत्यादि।

३. क्रिया का काल सूचित करने वाला शब्द भी सप्तमी में ही रखा जाता है।

४. नीचे लिखों के योग में भी सप्तमी ही होती है :— जिस पर विश्वास किया जाए, जिस के प्रति स्नेह आदि हो, जिस काम में किसी को नियुक्त किया जाए, जिस पर प्रहार किया जाए, जिस में किसी गुण क्रिया आदि की सम्भावना की जाए, इत्यादि।

(ख) सप्तमी उपपद का प्रयोग निम्नलिखित के सम्बन्ध में होता है :— साधु और असाधु शब्द के योग में जिसके प्रति अच्छा या बुरा व्यवहार सूचित किया जावे, स्वामी, ईश्वर, अधिपति, दायाद, साक्षी, प्रतिभू, प्रसूत, प्रसित, उत्सुक आदि शब्दों के योग में।

उदाहरण :—

१. कृष्ण पलंग पर बैठता है। — १. कृष्णः पर्यंके उपविशति।

२. बालकों में मोहन सब से चतुर है। — २. बालकेषु मोहनः पटुतमः अस्ति।

३. किसी पूज्य के प्रति शकुन्तला अपराध कर बैठी है। — ३. कस्मिंश्चित्पूजार्हे शकुन्तला अपराद्धास्ति।

४. कृष्ण का मां के साथ अच्छा व्यवहार है, परन्तु भाई के साथ बुरा। — ४. साधुः कृष्णो मातरि, असाधुश्च भ्रातरि।

५. राम का अपने भाई भरत पर बहुत प्रेम था। — ५. रामस्य स्वभ्रातरि भरतेऽतीव स्नेहः आसीत्।

६. तारे रात को आकाश में चमकते हैं। — ६. नक्षत्राणि रात्रौ आकाशे प्रकाशन्ते।

७. उसके हृदय में दया और लज्जा है। — ७. तस्य हृदये दया लज्जा चास्ति।

८. रामकुमार चटाई पर बैठा था। — ८. राजकुमारः कटे उपविशतिस्म।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

मुनि में उत्तम गुण होते हैं। पाणिनि का व्याकरण सब व्याकरणों में से श्रेष्ठ है। उसका अपने मामा के साथ अच्छा व्यवहार नहीं है। उसने चमड़े के लिये शेर को मारा। मेरा आप पर बहुत विश्वास है। पक्षियों में कौवा सब से धूर्त होता है और जानवरों में गीदड़[1]। धूर्त के-साथ धूर्तता ही करनी चाहिये। मैं

ने अपने बेटे को इस काम के लिए नियुक्त किया है। महाराज के दर्शनों के लिए सारी प्रजा उत्सुक थी। शेर कुएं में कूदा और मर गया। कलिंगा के युद्ध में अशोक के मन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। फलों में अंगूर[2] सब से मीठे होते हैं। अच्छे बालक पढ़ने के समय पढ़ते हैं और खेलने के समय खेलते हैं। मूर्ख पण्डित ने अपने आप को नदी में गिरा दिया और बहने लगा। राजाओं की उस सभा में शिशुपाल ने भगवान् कृष्ण का अनादर किया। गौओं के दोहे जाते होने पर[3] वह भी वहां पहुँचा। सूर्य के उदय होने पर आकाश में लाली[4] छा गई। कमल खिल उठे और कुमुद बन्द हो गये। सूर्य की किरणें आकाश में फैलने लगीं और राजा के महल से दुन्दुभि का डिम-डिम शब्द सुनाई देने लगा। मनुष्य को गुणों में अनुराग करना चाहिये।

संकेत :— [१] शृगालः। [२] द्राक्षा। [३] गोषु दुह्यमानासु। [४] रक्तिमा।

एकत्रिंशः पाठः

* प्रेरणार्थक क्रियाएँ

(१) प्रेरणा अर्थ में (क्रिया करवाने के अर्थ में) धातु से परे 'अय' प्रत्यय आता है।

(२) 'अय' परे होने पर धातु के अन्तिम स्वर को वृद्धि हो जाती है। जैसे- भू+अय+ति=भौ+अय+ति=भावयति आदि।

(३) अकारान्त और आकारान्त धातुओं के अन्त में 'प' का आगम होता है। जैसे—अपयति, स्थापयति आदि। परन्तु 'पा' (पीना) से परे 'प' का आगम नहीं होता।

(४) उपधा के ह्रस्व स्वर को गुण हो जाता है। और उपधा के ह्रस्व अकार को आकार हो जाता है। जैसे—चोरयति, पाठयति आदि।

(५) अधि+इ, क्री और जि धातुओं के अन्तिम स्वर को 'अ' हो जाता है। जैसे—अध्यापयति, क्रापयति, जापयति।

(६) 'हन्' धातु के न को 'त' हो जाता है। जैसे- घातयति।

---

* यदि क्रिया का फल कर्ता को ही मिले तो णिजन्त धातु से आत्मनेपद आता है। अन्यथा परस्मैपद।

णिजन्तरूप

	लट्	लङ्	लोट्
पठ्	पाठयति	अपाठयत्	पाठयतु
	(वह पढ़ता है)	(उस ने पढ़ाया)	(वह पढ़ाए)
हन्	घातयति.	अघातयत्	घातयतु
	(वह मरवाता है)	(उस ने मरवाया)	(वह मरवाए)
भू	भावयति	अभावयत्	भावयतु
गम्	गमयति	अगमयत्	गमयतु
पा (पीना)	पाययति	अपाययत्	पाययतु
पा (पालना)	पालयति	अपालयत्	पालयतु
दा (देना)	दापयति	अदापयत्	दापयतु
अर्प	अर्पयति	आर्पयत्	अर्पयतु
युध्	योधयति	अयोधयत्	योधयतु
वच्	वाचयति	अवाचयत्	वाचयतु
जप्	जापयति	अजापयत्	जापयतु
अधि+इ	अध्यापयति	अध्यापयत्	अध्यापयतु

	विधिलिङ्	लृट्
पठ्	पाठयेत्	पाठयिष्यति
	(वह पढ़ाए)	(वह पढ़ाएगा)
हन्	घातयेत्	घातयिष्यति
	(वह मरवाए)	(वह मरवाएगा)
भू	भावयेत्	भावयिष्यति
गम्	गमयेत्	गमयिष्यति
पा (पीना)	पाययेत्	पाययिष्यति

पा (पालना)	पालयेत्	पालयिष्यति
दा (देना)	दापयेत्	दापयिष्यति
अर्प्	अर्पयेत्	अर्पयिष्यति
युध्	योधयेत्	योधयिष्यति
वच्	वाचयेत्	वाचयिष्यति
जप्	जापयेत्	जापयिष्यति
अधि+इ	अध्यापयेत्	अध्यापयिष्यति

इत्यादि ।

उदाहरण :—

(१) वह शिष्य को पाठ पढ़ाता था। (१) स शिष्यं पाठं पाठयति स्म।
(२) वह दो वीरों को लड़ाता है। (२) स वीरौ योधयति।
(३) तू पथिकों को जल पिलाता है। (३) त्वं पथिकान् जलं पाययसि।
(४) ईश्वर संसार की पालना करता है। (४) ईश्वरो जगत् पालयति।
(५) बुद्धिमान् मूर्खों को शिक्षा दिलाते हैं। (५) बुद्धिमन्तो मूर्खान् शिक्षयन्ति।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

वह कन्या से भोजन पकवाता है। तुम इन वृक्षों को क्यों गिराते हो? मैं भाई को पत्र लिखाऊंगा। उस ने शत्रुओं को स्वर्ग भेजा। रावण ने मारीच को राम से मरवाया। कबूतरी ने पति से शिकारी की सेवा करवाई। निर्जला एकादशी के दिन धनी निधनों को मीठा जल पिलाते हैं। दासी बच्चों को खिलाएगी। कन्या ने दीपक जलाया।

उस ने अपने घर के द्वार को बन्द करा दिया। बाणभट्ट ने लोगों को हर्ष की कथा सुनाई। वह अपना कार्य स्वयं नहीं करता, दूसरों से करवाता है। कौवे ने सोने की माला से काले सांप को मरवा दिया। कल हम तुम्हें एक चित्र दिखाएंगे। शेर बोला, चल, मुझे शीघ्र दिखा कि वह दुष्ट कहां रहता है'? अशोक ने समस्त राज्य में पशुओं का मारना बन्द करवा दिया। क्या तुम ने उस को अपना काम दिखाया? कृष्ण ने कई राक्षसों को स्वयं मारा और कइओं को बलराम से मरवाया। देखो, वहां अपना सेवक अवश्य भेज देना। पाप बुद्धि को नाश कर देता है। अच्छा मित्र भले काम में लगाता है और बुरा मित्र बुरे काम में। बाल्मीकि के कहने से लव और कुश ने सारी रामायण की कथा सुनाई। महात्मा गान्धी प्रतिदिन उपदेश देते थे। भीष्म ने कहा—मैं तुम्हारे ही दोहते को सिंहासन पर बिठाऊँगा।

द्वात्रिंशः पाठः

वाच्य *

कर्मवाच्य और भाववाच्य की क्रिया बनाने के नियमः--

१. धातु के अन्त में 'य' लगा कर आत्मनेपद के प्रत्यय लगाए जाते

---

* संस्कृत में वाच्य तीन प्रकार के होते हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य। यदि धातु सकर्मक हो तो कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन होता है। और यदि धातु अकर्मक हो तो कर्तृवाच्य से भाववाच्य में बदलता है। कर्तृवाच्य में कर्ता में प्रथमा विभक्ति और कर्म में द्वितीया विभक्ति आती है। जैसे- "देवः पुस्तकं पठति"। कर्म वाच्य में कर्ता में तृतीया विभक्ति आती है और कर्म में प्रथमा। जैसे-"देवेन पुस्तकं पठ्यते"।

कर्तृवाच्य में क्रिया का वचन कर्त्ता के अनुसार होता है, परन्तु कर्मवाच्य में कर्म के अनुसार होता है।

है। जैसे—पठ + य+ते=पठ्यते (पढ़ा जाता है), गम्+य + ते= गम्यते (जाया जाता है)।

२. धातु के अन्तिम ह्रस्व 'इ' और 'उ' को दीर्घ हो जाता है। जैसे- जि=जीयते श्रु=श्रूयते इत्यादि।

३. प्रायः आकारान्त धातुओं के 'आ' को 'ई' हो जाता है। जैसे— पा=पीयते, दा=दीयते गा=गीयते आदि।

४. कुछ धातुओं के 'य' को 'इ', 'व' को 'उ' और 'र' को 'ऋ' हो जाता है। जैसे—यज=इज्यते, वप्=उप्यते आदि।

५. ऋकारान्त धातु के अन्तिम 'ऋ' को 'रि' हो जाता है। यदि 'ऋ' संयुक्त वर्ण से जुड़ा हुआ हो तो उसे 'अर्' होता है। जैसे— कृ= क्रियते, स्मृ=स्मर्यते आदि।

६. प्रायः धातु की उपधा के अनुनासिक का लोप हो जाता है। जैसे- बन्ध्=बध्यते, शंस्=शस्यते आदि।

उदाहरणः—

१. नौकरों से स्वामी का पीछा किया जाता है	१. भृत्यैः प्रभुरनुस्रियते।
२. किसानों से धान बोए जाते हैं।	२. कृषकैः शालय उप्यन्ते।
३. उस से गांव को जाया जाता है।	३. तेन ग्रामो गम्यते।
४. छात्रों से पुस्तकें पढ़ी गईं।	४. छात्रैः पुस्तकानि अपठ्यन्त।
५. मुझ से रामायण की कथा सुनी गई।	५. मया रामायणस्य कथा अश्रूयत।
६. मोहन से दूध पिया जाता है।	६. मोहनेन दुग्धं पीयते।
८. बलवान् राजा से शत्रु जीते गये।	८. बलवता नृपेण शत्रवोऽजीयन्त।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करोः—

रसोईये [1] से अन्न पकाया जाता है। ऊंट से पत्ते चबाए जाते हैं [2]। मुझ से यह चित्र देखा जाता है। यज्ञ कराने वालों से यज्ञ कराया जाता है। देवदत्त से पत्र लिखा जाता है। वह सबसे नमस्कार किया जाता है। युधिष्ठिर को धर्म पुत्र कहा जाता है। सीता से सुन्दर मृग देखा गया। धोबी से कपड़े धोए जाएंगे। कन्याओं से विवाह के समय गीत गाया जायगा। मन्त्रार्थियों से मुक्ति के लिए यत्न किया जाता है। नीचों से विघ्न के डर से काम आरम्भ नहीं किया जाता। क्या तुझे दिखाई नहीं देता कि घर में चोर घुस रहा है? हमें गुरु जी से मिलना चाहिये। पञ्चवटी में राम से सोने का मृग मारा गया। दूत से राजा को सन्देशा भेजा गया। कुम्भ के समय लाखों मनुष्यों से गङ्गा में स्नान किया गया। हनुमान से [3] सीता अशोक वाटिका में देखी गई। अध्यापक से उपद्रवी बालक पीटे गये। अनाथ बच्चों से रोया गया और माता पिता को स्मरण किया गया। राजा शिबि से कबूतर की रक्षा की गई।

संकेतः—(१) सूदेन। (२) चर्व्यन्ते। (३) हनुमता।

———

त्रयस्त्रिंशः पाठः

कृदन्त

* शतृ (अत्) और शानच् (आन या मान)

'पढ़ता हुआ' 'खेलता हुआ' 'रोता हुआ' आदि का अनुवाद करने के लिए शतृ और शानच प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे —

१ तू जानता हुआ भी नहीं जानता।	१ त्वं जानन् अपि न जानासि।
२ उस ने देखते हुए भी न देखा।	२ स पश्यन्नपि नापश्यत्।
३ माता पिता की सेवा करता हुआ बालक प्रशंसा पाता है।	३ पितरौ सेवमानो बालकः सर्वैः प्रशस्यते।
४ बच्चा रोता हुआ माता के पास गया।	४ शिशुः रुदन् मातुः समीपमगच्छत्।
५ कांपती हुई लड़की ने कहा।	५ कम्पमाना कन्या अवदत्।
६ सोते हुए बच्चे को मत सताओ।	६ शयानं बालकं मा तुदत।
७ गिरते हुए मदारी को सब ने देखा।	७ पतन्तमैन्द्रजालिकं सर्वेऽपश्यन्।

रूप

		पुंलिङ्ग	स्त्री०	नपुं०
गम् =	जाना	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
हस् =	हंसना	हसन्	हसन्ती	हसत्
कृ =	करना	कुर्वन्	कुर्वती	कुर्वत्

* परस्मैपद के धातुओं के साथ शतृ और आत्मनेपद के धातुओं के साथ शानच जोड़ा जाता है।

		पुँल्लिङ्ग	स्त्री०	नपुं०
नृत् =	नाचना	नृत्यन्	नृत्यन्ती	नृत्यत्
सेव् =	सेवा करना	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
कम्प् =	कांपना	कम्पमानः	कम्पमाना	कम्पमानम्
वृत् =	होना	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

मार्ग में जाते हुए पथिक ने एक बन्दर देखा। कुदाल[1] से खोदता हुआ[2] मनुष्य पानी पालेता है। रोते हुए बालक ने अपना सारा हाल सुनाया[3]। कांपता हुआ दशरथ बोला — मैं ने श्रवण को जान बूझ कर नहीं मारा। भागती हुई नारी के सिर से उस का दुपट्टा[4] गिरा। मृग के पीछे जाते हुए राम ने लक्ष्मण को समझाया। जो मनुष्य देखते हुए भी नहीं देखते और सुनते हुए भी नहीं सुनते उन से मेरा क्या काम ? वृक्ष पर चढ़ता हुआ श्याम दास नीचे गिर पड़ा। वीर वर ने वहां रोती हुई एक स्त्री को देखा। नाचता हुआ मोर और गाती हुई कोयल[5] किस को अच्छी[6] नहीं लगती ? तू तो सारा दिन हंसते खेलते बिता देता[7] है। जो बालक बचपन में परिश्रम नहीं करते वे सारा जीवन रोते हुए बिताते हैं। प्रातः काल ईश्वर को याद करते हुए उठो। वृक्ष से गिरते हुए फल को मैं ने लिया। दान देता हुआ मनुष्य शोभा पाता है। वह और धन इकट्ठा करता हुआ पहला भी खो बैठा। खेलते हुए बालकों ने सांप को मार दिया।

संकेतः— (१) खनित्रेण। (२) खनन्। (३) अश्रावयत्। (४) उत्तरीयम्। (५) कोकिल। (६) कस्मै न रोचते। (७) यापयसि।

चतुस्त्रिंशः पाठः

कृदन्त (Contd)

यत्, तव्य और अनीय *

"चाहिये" या "योग्य" का अनुवाद करने के लिए यत्, तव्य और अनीय प्रत्यय धातु के साथ जोड़े जाते हैं। जैसे—

(१) उसे वहां होना चाहिये।	(१) तेन तत्र भाव्यम् (भवितव्यम्, भवनीयम्)।
(२) मुझे अब जाना चाहिये।	(२) इदानीं मया गन्तव्यम् (गम्यम्, गमनीयम्)।
(३) उसे दूध पीना चाहिये।	(३) तेन दुग्धं पातव्यम् (पेयम्, पानीयम्)।
(४) सदा प्रातः उठना चाहिये।	(४) सदा प्रातः उत्थातव्यम्।
(५) यह चित्र देखने के योग्य है।	(५) एतच्चित्रं दर्शनीयमस्ति।
(६) वेद का उपदेश सुनना चाहिये।	(६) वेदस्योपदेशः श्रोतव्यः।
(७) भगवान् राम का चरित्र अनुकरण करने योग्य है।	(७) भगवतो रामस्य चरित्रमनुकरणीयमस्ति।

रूप

	यत्	तव्य	अनीय		यत्	तव्य	अनीय
गम्	गम्य	गन्तव्य	गमनीय	स्तु	स्तुत्य	स्तोतव्य	स्तवनीय
पठ्	पाठ्य	पठितव्य	पठनीय	हन्	वध्य, घात्य	हन्तव्य	हननीय

* यत्, तव्य और अनीय का प्रयोग कर्मवाच्य या भाववाच्य में ही प्रायः होता है।

स्था	स्थेय	स्थातव्य	स्थानीय	दा	देय	दातव्य	दानीय
नी	नेय	नेतव्य	नयनीय	भी	भेय	भेतव्य	भयनीय
स्मृ	स्मर्य	स्मर्तव्य	स्मरणीय	ज्ञा	ज्ञेय	ज्ञातव्य	ज्ञानीय

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो:—

छात्रों को समय पर पढ़ना चाहिये और समय पर खेलना चाहिये। दीन दुःखियों को नहीं सताना चाहिये १। अनाथों की सहायता करनी चाहिए। गुरुजनों का आदर करना चाहिये। मिथ्या अभिमान कभी नहीं करना चाहिये। काश्मीर के प्राकृतिक दृश्य देखने योग्य हैं २। रात को देर तक नहीं जागना ३ चाहिये। पैदल चलने वाले लोग इस मार्ग से जाएं। बताओ अब मुझे क्या करना चाहिये? तुम्हारा प्रयत्न वास्तव में प्रशंसा के योग्य है। हमें सदा अपना कर्त्तव्य पूरा करना चाहिये। झूठ कभी भी नहीं बोलना चाहिये। पाप का काम नहीं करना चाहिये। शिक्षा के अभ्यास में मन लगाना चाहिये। ईश्वर का सदा स्मरण करना चाहिये। श्रीमद् भगवद्गीता और उपनिषदों का अध्ययन करना चाहिये। वैदिकमत में श्रद्धा होनी चाहिये। अपने देश के लिये सब कुछ न्योछावर कर देना चाहिये।

संकेतः—(१) तोदनीयाः, तोत्तव्याः। (२) दर्शनीयानि।
(३) जागरितव्यम्।

—*—

पंचात्रिंशः पाठः

कृदन्त (Contd)

क्त, क्तवतु, क्त्वा और तुमुन्

क्तः— भूत काल का भाव प्रकट करने के लिये तृतीया विभक्ति के साथ क्तान्त का प्रयोग ऐसे ही किया जाता है जैसे कि कर्मवाच्य में भूतकालिक क्रिया का होता है। क्तान्त के लिङ्ग, वचन और विभक्ति कर्म के अनुसार होते हैं। और कर्ता तृतीया में होता है। परन्तु गत्यर्थक धातुओं और अकर्मक धातुओं आदि के क्तान्त रूप कर्तृवाच्य में भी प्रयुक्त होते हैं।

* क्तवतु :— भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिये क्तवतु का प्रयोग ऐसे ही किया जाता है जैसे कि कर्तृवाच्य में भूतकालिक क्रिया का होता है।

क्त्वा :— जब कर्ता एक कार्य समाप्त कर के दूसरा कार्य करता है तो पहिले किये गये कार्य के लिये क्त्वान्त का प्रयोग किया जाता है। यदि धातु से पूर्व कोई उपसर्ग हो तो क्त्वा के स्थान पर 'य' जोड़ा है

तुमुन् :— यदि क्रिया के लिये दूसरी क्रिया बताई जाए, तो उस के बोधक धातु के आगे 'तुम्' प्रत्यय लगाया जाता है।

जैसे—

१ वह जाना चाहता है।	१ स गन्तुमिच्छति।
२ मैं ने यह पुस्तक पढ़ी।	२ मया एतत्पुस्तकमधीतम्।

---

* कर्तृ वाच्य में क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों को लिङ्ग और वचन कर्त्ता के अनुसार ही दिया जाता है।

३ वह घर की ओर चल दिया।	३ स गृहं प्रति प्रस्थितः।
४ उस ने झूठ बोलना छोड़ दिया।	४ स मिथ्या-भाषणं त्यक्तवान्।
५ यहां आकर आप स्वयं देखें।	५ अत्र आगत्य भवान् स्वयं पश्यतु।
६ दूध पीकर जल मत पी।	६ दुग्धं पीत्वा जलं मा पिब।
७ छात्र पढ़ने के लिये पाठशाला को जाते हैं।	७ छात्राः पठितुं पाठशालां गच्छन्ति।
८ मैं अब उसे देखना चाहता हूँ।	८ अहमिदानीं तं द्रष्टुमिच्छामि।

रूप

	क्त	क्तवतु	क्त्वा	तुमुन्
गम् =	गत	गतवत्	गत्वा	गन्तुम्
हन् =	हत	हतवत्	हत्वा	हन्तुम्
दृश् =	दृष्ट	दृष्टवत्	दृष्ट्वा	द्रष्टुम्
स्था =	स्थित	स्थितवत्	स्थित्वा	स्थातुम्
पठ् =	पठित	पठितवत्	पठित्वा	पठितुम्
पच् =	पक्व	पक्ववत्	पक्त्वा	पक्तुम्
सह् =	सोढ	सोढवत्	सोढ्वा (सहित्वा)	सोढुम् (सहितुम्)
ब्रू (वच्) =	उक्त	उक्तवत्	उक्त्वा	वक्तुम्
शास् =	शिष्ट	शिष्टवत्	शासित्वा शिष्ट्वा	शासितुम्

—:*•*:—

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो :—

ब्राह्मण केकड़े को लेकर[1] गांव की ओर चल दिया। उसने यह कह कर उस का सिर काट लिया। कल हम सब नदी की ओर गये। अपने कल्याण के लिये सब को यत्न करना चाहिये। स्नान कर के सन्ध्या करो। एक काम करके दूसरा काम करना चाहिये। छात्र गुरू को प्रणाम कर के उस के पास ही बैठ गया। भोजन खा कर कभी न दौड़ना चाहिये। सिपाही[2] चोर को पकड़ कर राजा के पास ले गये। राम ने सीता को छुड़ाने के लिये लङ्का पर चढ़ाई की[3]। बहिरा मित्र का हाल पूछने के लिये गया। इन्द्र और अग्नि ने राजा की परीक्षा करने के लिये बाज और कबूतर का रूप धारण किया। उस की बातों को याद कर के मुझे हंसी आगई। राम ने शिव के बड़े धनुष को तोड़ कर सीता से विवाह किया। भरत राम की खड़ावें[4] ले कर अयोध्या को लौटा। रानियों को समझाने के लिये वसिष्ठ स्वयं वहां आए। प्रति दिन युद्ध की खबरें सुन २ लोग बहुत घबराए[5]। नल की कथा सुन कर मेरा मन बहुत प्रसन्न हुआ। अचानक[6] ही आंधी चलने लगी और वर्षा भी होने लगी। वह कुछ भी न सोच सके कि क्या करना चाहिये अथवा क्या कहना चाहिये। परिहास के निमित्त भर्ता कहीं छिपा हुआ होगा। बीता हुआ समय फिर कभी वापिस नहीं आता[7]।

संकेत :— (१) कर्कटमादाय। (२) रक्षापुरुषाः। (३) आक्राम्यत्। (४) पादुके। (५) भृशमुदविजन्त। (६) सहसैव। (७) न प्रत्यावर्तते।

षट्त्रिंशः पाठः

लोकोक्तयः (Proverbs)

१. अन्धों में काना राजा।	१. यत्र देशे द्रुमो नास्ति तत्रैरण्डोऽपि द्रुमायते।
२. अकल बड़ी कि भैंस।	२. युक्तिः शक्तेर्गरीयसी।
३. अपना उल्लू सिद्ध करना।	३. सर्वः स्वार्थं समीहते।
४. अपने मुंह मियां मिट्ठू।	४. आत्मश्लाघा न शोभते।
५. अपना लगाया वृक्ष भी नहीं काटा जाता।	५. विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्।
६. अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है।	६. स्वके गेहे कुक्करोऽपि तावच्चण्डो भवति।
७. आसमान से गिरा खजूर में अटका।	७. वृश्चक-भयात्पलायमान आशीविषमुखे निपतितः।
८. आग लगने पर कुआं खोदना।	८. उद्दीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः।
९. आंखों से अन्धा नाम नयन सुख।	९. लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति।
१०. एक एक, दो ग्यारह।	१०. सङ्घे शक्तिः कलौ युगे।
११. एक करेला दूसरे नीम चढ़ा।	११. मर्कटस्य सुरापानं ततो वृश्चक-दंशनम्।
१२. कहने से करना अच्छा।	१२. वाचः कर्मातिरिच्यते।
१३. कटा हुआ पेड़ नहीं बढ़ता।	१३ न हि छिन्नस्तरू रोहति।
१४. ख्वाजे का गवाह मेंडक।	१४. उष्ट्राणां विवाहेषु गीतं गायन्ति गर्दभाः।

१५. जब तक सांस तब तक आस।	१५. यावत् प्राणास्तावदाशा।
१६. जितना चाहा उतना पाया।	१६. यावदिष्टं तावल्लब्धम्।
१७. जितने मुंह उतनी बातें।	१७ मुण्डे २ मतिर्भिन्ना।
१८. जैसे को तैसा।	१८. शठे शाठ्यं समाचरेत।
१९. जैसी करनी वैसी भरनी।	१९. स्वकर्मफलं भुङ्क्ते लोकः।
२०. जैसा देस वैसा भेस।	२०. यथा राजा तथा प्रजा।
२१. दाम बनाए काम।	२१. अर्थे सिद्धिः प्रतिवसति। Or सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति।
२२. दूर के ढोल सुहावने।	२२. पवना दूरतो रम्याः।
२३. धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।	२३ इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः। or उभयतो भ्रष्टः।
२४. धर्मवृद्धों की आयु नहीं देखी जाती।	२४. न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते।
२५. नाच न जाने आंगन टेढ़ा।	२५. कञ्चुकमेव निन्दति प्रायः शुष्क-स्तनी नारी।
२६. नौ नकद न तेरह उधार।	२६. वरमद्य कपोती न श्वो मयूरी।
२७. पहले तोलो फिर बोलो।	२७. मनः पूतं समाचरेत्।
२८. बुरी संगत से अकेला अच्छा।	२८. प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनं वरम्।
२९. मरता क्या न करता।	२९. बुभुक्षितः किं न करोति पापम्।
३०. बन्दा जोड़े पली २ राम रुढ़ावे कुप्पा।	३०. केनेश्वरस्येहितमूहितम् विभो।
३१. माया को माया मिले कर २ लम्बे हाथ।	३१. इह लोके हि धानिनां परोऽपि स्वजनायते।

३२. रत्न का सोने से संयोग । 　३२. रत्नं समागच्छतु काञ्चनेन ।

३३. विपत्ति अकेली नहीं आती । 　३३. छिद्रेष्वनर्था बहुली-भवन्ति ।

३४. संघठन में शक्ति होती है । 　३४. संघे शक्तिः कलौ युगे ।

३५. स्वास्थ्य धर्म का पहला साधन है 　३५. शरीरमाद्यं खलु धमसाधनम् ।

३६. सज्जनों की सम्पत्ति परोपकार के लिए । 　३६. परोपकाराय सतां विभूतयः ।

३७. समय बड़ा बलवान है । 　३७. समय एव करोति बलाबलम् ।

३८. संदेह से सत्या नास । 　३८. संशयात्मा विनश्यति ।

३९. साबुन मलने से गधा गाए नहीं बनता । 　३९. न हि गोधा सपन्ती सर्पणा-दहिभवति ।

४०. हाथ कंगन को आरसी क्या ? 　४०. प्रत्यक्षे किं प्रमाणम् ?

-*०*—

सप्तत्रिंशः पाठः

Exercise I

सेवा धर्म बहुत कठिन है, इसे योगी भी नहीं पा सकते। जीवन एक संग्राम है, इस में धीर वीर की ही जय होती है। योगिराज श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया। एक दिन बूढ़े खरगोश की बारी आई। भोलापन बच्चों का मुख्य स्वभाव है। स्वतन्त्रता सब का जन्मसिद्ध अधिकार है। जैसी मधुर संस्कृत भाषा है वैसी और कोई नहीं। स्वयं उगाए हुए वृक्ष के साथ भी मनुष्य का स्नेह हो जाता है। फिर शरीर से उत्पन्न हुई हुई सन्तान का तो कहना ही क्या? विघ्न के भय से नीचों से काम आरम्भ ही नहीं किया जाता। यह सब कुछ सुन कर शारदा नन्द ने कहा। यह जो संसार रूपी कार्य है इस का बनाने वाला भी कोई अवश्य है। वही परमेश्वर कहलाता है। नवयुवकों को देश सेवा का व्रत लेना चाहिये।

Exercise II

सच्चे मित्रों से बहुत उपकार होते हैं। मित्र वे हैं जो दुःख में काम आते हैं। स्वार्थी मित्र तो कई मिल जाते हैं। युवकों को मित्र बनाने में बहुत सावधान रहना चाहिये। आज कल के युवक जिस किसी को मित्र बना लेते हैं, परन्तु वे स्वार्थी मित्र शीघ्र ही अपना पता दे देते हैं। वह बुरे मार्ग पर चलाते हैं। ऐसे मित्र मित्र नहीं होते वरन् बड़े भारी शत्रु होते हैं। इन से सदा बचना चाहिये। बुरी संगति से मनुष्य अकेला ही अच्छा होता है। कीचड़ को धोने की अपेक्षा उसे न छूना ही अच्छा है। आदर्श मैत्री तो कृष्ण और सुदामा की थी।

Exercise III

आओ सैर को चलें। प्रातः काल का समय है। ठण्डी २ पवन चल रही है। पृथिवी हरी २ घास से ढकी हुई कैसी शोभा पा रही है? वृक्षों की शाखाएं फलों के भार से लदी हुई हैं। फूल हवा में अपनी मधुर सुगन्धि को उड़ा रहे हैं। पक्षी वृक्षों पर बैठ कलरव कर रहे हैं। नदी का जल कैसे बह रहा है। पानी पर छोटी २ लहरें उठ २ कर नाचती हैं। देखने में कैसी अच्छी लगती हैं। आओ यहां नदी के किनारे पर बैठ जाएं और बहते हुए जल की शोभा को देखें।

Exercise IV

प्राचीन समय में मुनि लोग जंगलों में रहते और तपस्या करते थे। उन के गुरुकुलों में हजारों शिष्य विद्या पढ़ा करते थे। गौ का दूध शारीरिक शक्ति और विचार शक्ति को बढ़ाता है। अमृतसर नगर सिक्खों का एक प्रसिद्ध स्थान है और दरबार साहिब का सुनहरी मन्दिर सिक्खों के सुनहरी इतिहास की यादगार है। लोगों का कहना है कि यवनों के राज्यकाल में युवति राजकन्याओं के साथ कई प्रकार के बलात्कार किये जाते थे। आकाश में उड़ता हुआ वायुयान बिल्कुल मोटे खासे गिद्ध पक्षी सा मालूम पड़ता है। अशोक का राज्य दक्षिण भारत के कुछ प्रान्त को छोड़ कर सारे हिन्दुस्थान में फैला हुआ था। महाराणा प्रताप सिंह उदयसिंह के पुत्र थे। इनका जन्म ९ मई, १५४० ईसवी में हुआ था। अहिंसा सब से बड़ा धर्म है। महात्मा गान्धी ने हमें अहिंसा और सत्याग्रह का पाठ पढ़ाया है।

Exercise V

कैकेयी ने कहा—महाराज ! आप ने मुझे दो वरदान देने का वचन दिया था। मैं आज मांगती हूँ। पहले वर से आप भरत को अयोध्या का राज दें और दूसरे से राम को चौदह वर्ष का बनवास ! राजा यह शब्द सुन कर चित्रवत् खड़ा रह गया। उसे कभी भी आशा न थी कि कैकेयी ऐसा वर मांगेगी। वह अपनी भूल पर पछताने लगा। पर अब पछताए होत क्या जब चिड़ियां चुग गईं खेत। अब वह क्या कर सकता था। वचन दे चुका था। वचन का लौटाना रघुवंशियों का काम नहीं था। महाराज मूर्छित होकर पृथिवी पर गिर पड़ा।

Exercise VI

बुद्धि शक्ति से बलवान है। हम जो काम शक्ति से नहीं कर सकते बुद्धिमान उसे आसानी से कर लेते हैं। बुद्धि के बल से ही वैज्ञानिकों से नित नये २ आविष्कार किये जा रहे हैं। बुद्धि के बल से ही मनुष्य हाथियों और शेरों जैसे हिंसक पशुओं को वश में कर लेता है। जिस के पास बुद्धि नहीं उस का जन्म ही संसार में व्यर्थ है। चाणक्य ने बुद्धिबल से ही नन्द के विशाल राज्य का नाश कर दिया और चन्द्र गुप्त को भारत का सम्राट् बना दिया। बीरबल बुद्धि के बल से ही अकबर का मन्त्री बन गया। अकबर उसे अपना सब से प्रिय मित्र समझता था। उसने अपनी बुद्धि के कई चमत्कार दिखाए और अकबर की कई कठिनाईयों में सहायता की उस की सैंकड़ों कहानियां आज तक प्रसिद्ध हैं।

Exercise VII

दमयन्ती ने उस ब्राह्मण से पूछा—"कहिये महाराज! क्या सन्देशा लाये? क्या स्थिति आशाजनक तो है?" ब्राह्मण ने अयोध्या में जो कुछ देखा था, सब दमयन्ती को सुना दिया। दमयन्ती तुरत समझ गई कि बाहुक सारथी राजा नल के सिवा और कोई नहीं है। उस ने ब्राह्मण का धन्यवाद किया, और बहुत सा धन देकर उसे बिदा कर दिया। उस के चले जाने पर उसने दासी द्वारा सुदेव को अपने पास बुलवाया और उसको प्रणाम करके बोली—"महाराज! आप पण्डित, तीक्ष्णबुद्धि और दूरदर्शी हैं। इसी लिये आप को एक कार्य विशेष का भार सौंपा जाता है। मैं ने आज ही दूत के मुख से सुना है कि बाहुक नाम धारी एक व्यक्ति ने सारथी के वेश में अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के यहां आश्रय लिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वही मेरे स्वामी हैं। आप शीघ्र से शीघ्र कितने दिनों में अयोध्या पहुंच सकते हैं?"

Exercise VIII

कहते हैं कि जिस समय स्वामी रामतीर्थ का जन्म हुआ उस समय उन के दादा पं० राम लाल ने उन की जन्मकुण्डली बनाई और उसे देख कर वे रोने लगे। और थोड़ी देर में वे फिर हंसने लगे। जब उन से पूछा गया तब उन्हों ने कहा, "इस बालक का जन्म ऐसे बुरे समय में हुआ है कि या तो यह स्वयं मर जायगा या इस की माता का देहान्त होगा। इसी विचार से मैं रोया था। यदि ईश्वर की कृपा से यह बालक बच गया तो यह एक बड़ा महात्मा होगा। इसी विचार से मैं हंसा था।"

ईश्वर की ऐसी ही इच्छा थी कि जन्म के थोड़े दिनों के बाद राम तीर्थ की माता का देहान्त हो गया। अत एव इन का पालन पोषन इन के पिता की बड़ी बहिन ने किया। वह एक बड़ा धर्मात्मा स्त्री थी। वह अपना अधिक समय देवताओं की पूजा में और तीर्थों की यात्रा में बिताया करती थी। तीर्थों का यात्रा करने के कारण ही उस ने इन का नाम रामतीर्थ रखा।

Exercise IX

मन्दिर नामी पर्वत पर दुर्दांत नामक सिंह रहा करता था। वह सदा पशुओं को मार कर खाया करता था। एक बार सब पशुओं ने मिलकर सिंह से निवेदन किया, "हे पशु राज! आप एक बार ही बहुत से पशुओं को क्यों मारते हो। यदि तुम्हें स्वीकार हो तो हम ही एक २ पशु प्रति दिन तुम्हारे खाने के लिये भेज दिया करें। तब सिंह ने उत्तर दिया, यदि तुम्हें यही पसन्द है तो ऐसे ही सही। तब से ले कर सिंह प्रति दिन एक ही पशु को खाया करता। एक बार किसी बूढ़े खरगोश की बारी आई। वह धीरे २ चलता हुआ देर से सिंह के पास पहुँचा। भूख से व्याकुल हुए सिंह ने उसे कहा, "अरे तू देर करके क्यों आया है? खरगोश बोला, " महाराज? इस में मेरा अपराध नहीं। मैं इधर ही आ रहा था कि रास्ते में दूसरे सिंह ने मुझे पकड़ लिया। उस के आगे फिर आने की शपथ खा कर मैं आप को कहने आया हूं सिंह ने कहा, "शीघ्र ही चल कर मुझे वह दुष्ट दिखाओ।" तब खरगोश ने सिंह को एक कूएं के पास ले जा कर उस के जल में उस की अपनी ही परछाई दिखाई। तब शेर ने कूएं में छलांग लगा दी और जान दे दी। सच है कि जिस के पास बुद्धि है उस के पास बल है।

Exercise X

उस के बाद एक बार सिद्धों के राजा विश्वावसु का पुत्र मित्रावसु जीमूतवाहन का मित्र बन गया। उस की मलयवती नामी छोटी बहिन थी। एक बार वह जीमूत—वाहन के पास आकर बोला, मैं अपनी बहिन तुम्हें देना चाहता हूँ। जीमूत-वाहन ने इस बात को स्वीकार कर लिया और उस से विवाह कर लिया। विवाह करके जीमूत वाहन कभी विश्वावसु के साथ समुद्र के किनारे के बन देखने के लिये गया। वहां उस ने "हाय पुत्र! हाय बेटा!" कह कर चल्लाती हुई स्त्री को आश्वासन देते हुए एक पुरुष को देखा। जीमूतवाहन ने पूछा, "महा पुरुष! तू कौन है? क्या चाहता है? और तुम्हारी माता क्यों शोक कर रही है?" उसने कहा, "महाभाग! पहिले सांपों को खाने वाला गरुड़ हरि से वर पा कर जिस किसी सांप को देखता था खा जाता था। उसने सारे रसातल को नागों से रहित कर दिया। प्रति दिन ऐसा होता देख कर वासुकि ने उस के साथ समय किया कि हे पक्षिराज! तुम्हारे खाने के लिये प्रति दिन मैं एक २ नाग को समुद्र के किनारे पर्वत पर भेज दिया करूंगा। और तुम ने पाताल में प्रवेश मत करना। इस प्रकार वासुकि से प्राथना करने पर पक्षिराज गरुड़ प्रति दिन उस से भेजे हुए नाग को खाता है। आज मुझ चूड़ामणी की बारी है।"

Exercise XI

भारत के तीन सर्वश्रेष्ठ कवियों कालिदास, तुलसीदास और रवीन्द्र नाथ में से कालिदास का नाम सब से पहले आता है। यूरोप के विद्वानों में संस्कृत का प्रचार और भारतीय साहित्य के प्रति अनुराग कालिदास के ही अभिज्ञान शाकुन्तल के कारण हुआ। कहते हैं कि कवि कालिदास बचपन में अनपढ़ और मूर्ख था। किसी कारणवश उस का विवाह एक विदुषी राजकुमारी विद्योत्तमा के साथ हुआ। विद्योत्तमा बहुत पढ़ी लिखी, समझदार और सुन्दर राजकुमारी थी। जब पति पत्नी एकान्त में बैठ कर बात चीत करने लगे तो विद्योत्तमा ने पूछा, "अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः।" कालिदास अनपढ़ होने के कारण इस वाक्य का कुछ भी अर्थ न समझा। विद्यावती को तत्क्षण ही पता चल गया कि मैं एक मूर्ख से व्याही गई हूँ। उसे महान कष्ट हुआ और वह फूट २ कर रोने लगी। कालिदास उस के रोने को न देख सका। उसे उस पर बड़ी दया आई। उस ने उसी क्षण प्रतिज्ञा की कि जब तक पूर्ण विद्वान् न बनूंगा घर नहीं आऊंगा। वह वहां से काशी चला गया और विद्या का अभ्यास आरम्भ कर दिया। कुछ समय के पश्चात् वह बहुत बड़ा विद्वान् और महाकवि बना।

Exercise XII

ईश्वर की अपार कृपा से और महात्मा गान्धी के यत्न से अब भारत ने फिर से एक बार स्वतन्त्रता का मुख देखा है। यह स्वतन्त्रता हमें कई सौ सालों के पश्चात् प्राप्त हुई है। देश की बागडोर भी इस समय ईश्वर की दया से योग्य, अनुभवी और त्यागी नेताओं के हाथ में है। डाक्टर

राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति के पद पर नियुक्त हैं। प्रातः स्मरणीय पं० जवाहर लाल नेहरू प्रधान मन्त्री हैं और सरदार वल्लभ भाई पटेल उपप्रधान मन्त्री हैं। पं० नेहरू का यश तो देश और विदेश सब स्थानों पर फैला हुआ है। भारतीय युवकों के तो यह हृदय के सम्राट हैं। विदेश में भी जितना सम्मान और गौरव इस महा पुरुष को प्राप्त है उतना शायद ही संसार के किसी भी व्यक्ति को प्राप्त हो। सरदार पटेल लोह-पुरुष कहे जाते हैं। यह अत्यन्त बुद्धिमान और अनुभवी व्यक्ति हैं। छोटे बड़े सब मनुष्यों के हृदय में सरदार पटेल का बहुत आदर है।

Exercise XIII

एक बार महात्मा गान्धी के पुत्र मणिलाल को बहुत सख्त बुखार चढ़ा। सन्निपात के लक्षण दिखाई देने लगे। डाक्टर ने अण्डे और मुर्गी का मांस खाने के लिये कहा। महात्मा गान्धी के परिवार वालों में से कोई भी मांसाहारी न था। वे अन्नाहारी थे। इस लिये उन्हों ने ऐसा करने से इनकार कर दिया और ईश्वर के भरोसे पर बच्चे की जल-चिकित्सा आरम्भ की। बच्चे की चिकित्सा कर रहे थे और मुंह से राम राम कह रहे थे। ईश्वर पर उन का अटल विश्वास था। ईश्वर की कृपा से थोड़ी देर के बाद बच्चे को पसीना आ गया और उसका बुखार उतर गया। यह सच है कि ईश्वर पर विश्वास रखने से बिगड़े हुए काम भी सुधर जाते हैं। और यही कारण है कि धर्मशास्त्र ईश्वर पर अटल विश्वास रखने का उपदेश बार २ देते हैं।

Exercise XIV.

(Punjab University, 1944)

अनुवाद करो :—

(a) १. सम्राट् अकबर के शासन काल में टोडर मल एक बड़ा बजीर था। लाहौर नगर में उसके चार पुत्र रहते थे।

२. कुमार और चन्द्र दोनों भाई एक ही स्कूल में पढ़ते हैं। पढ़ाई में दोनों हुश्यार हैं।

३. तुम कहते हो कि यह पुस्तक मेरी नहीं। तुम्हें यह किस ने दी थी ?

४. श्रीमान जी ! हिसाब का अध्यापक हमें मेहनत से पढ़ाता है। इसलिये हम सब उसका विशेष आदर करते हैं।

५. हिटलर को जीत कर अंग्रेज लोग सुख से राज करेंगे। तब शायद भारत देश को भी स्वराज्य मिल जावेगा।

(b) १. गर्मी से पीड़ित अपने खेत में वृक्ष की छाया में बैठे हुये हरि ने एक भयानक सांप देखा।

२. जिस प्रकार पिता अपने बच्चों का पालन करता है उसी प्रकार राजा को भी प्रजा का पालन करना चाहिये।

३. सेवा धम बड़ा कठिन है। इस को योगी लोग भी नहीं जान सकते।

(c) गौतमबुद्ध धर्म प्रचार के लिये जब देश में भ्रमण करता था तब "महाराज शुद्धोधन बहुत बीमार हैं" यह सुन कर वह झट शिष्यों के साथ पिता जी को देखने के लिये राजधानी पहुंचा। परन्तु उस समय महाराज की अवस्था शोचनीय थी। पुत्र के मुख से धर्मोपदेश सुनते २ उन्हों ने शरीर त्याग दिया।

Exercise XV.

(Punjab University, 1945.)

संस्कृत में अनुवाद करो :—

(a) १. वैदिक आर्य सप्त-सिन्धु देश में रहते थे। यहां ही इन की सभ्यता का विकास हुआ।

२. लङ्का में जा कर, राजा रावण को मार कर रामचन्द्र सीता के साथ अयोध्या लौटे।

३. ऐ लड़को! मैं आज तुम सब को नदी के तीर पर ले जाना चाहता हूं।

४. सुनिये, इस विषय में तुम्हें कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिये।

५. उसने कहा कि मैं दसवें दिन आपके घर आऊंगा।

(b) १. सीता को पतिव्रता जानते हुये भी राम ने निन्दा के भय से उसे वन में छोड़ दिया।

२. जब अध्यापक ने क्लास में प्रवेश किया तो सब लड़के उस के सत्कार के लिये खड़े हो गये।

३. गुणों से ही मनुष्य सब जगह ऊंची पदवी पाता है।

(c) प्राचीन काल में शाक्य लोगों की कपिलवस्तु राजधानी थी। वहां शुद्धोधन नामी शाक्य राजा राज्य करता था। माया देवी उस की औरत थी। बूढ़ी उमर में उन दोनों के घर एक पुत्र पैदा हुआ। क्योंकि उस के जन्म लेने पर सारे मनोरथ सिद्ध हो गये, पिता ने उस का नाम सिद्धार्थ रक्खा। यही कुमार निर्वाण पाने पर बुद्ध के नाम से मशहूर हुआ।

———

Exercise XVI

(Punjab University, 1946.)

अनुवाद करो :—

(a) परमात्मा को नमस्कार कर पाठ आरम्भ करो, उस पर विश्वास रखो, अवश्य अपने कार्य में सफलता मिलेगी।

(b) वृष्टि हो रही है, दरवाजा बन्द कर दो, खिड़कियां खोल दो।

(c) ब्रह्मचारी को श्रम से क्या ? उस को तो विद्या पढ़ने से ही प्रयोजन है।

(d) गुरु जी कुर्सी पर बैठ तथा मेज़ पर पुस्तक रख हमें पढ़ाते हैं।

(e) कोई विद्यार्थी परिश्रम के बिना परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सकता। परिश्रम ही सुख का साधन है।

(f) तुम्हारी दवात में अच्छी स्याही हो तो मुझे दो। मैं अपनी कलम से चिट्ठी लिख अभी डाकघर (पत्रगृहम्) भेज दूंगा।

(g) हमारी श्रेणी में चालीस लड़के हैं। इन में मोहन सब से अच्छा है।

(h) इस बगीचे में नाना प्रकार के सुन्दर फूलों और फलों के वृक्ष हैं। यहां एक सरोवर में फूल खिले हैं।

(i) मेरा छोटा भाई ज्वर से पीड़ित होने के कारण कल स्कूल में अनुपस्थित था। आज उसने प्रधान शिक्षक महोदय के पास अर्जी (प्रार्थनापत्र) भेज दी।

केवल एक का संस्कृत में अनुवाद करो :-

(a) भारतवर्ष में कुरुकुल में शान्तनु नाम का सब गुणों से संपन्न एक राजा हुआ। उस की बड़ी रानी गङ्गादेवी ने सात पुत्रों को उत्पन्न किया। परन्तु सब जन्म के कुछ समय के पश्चात् ही मर

गये। आठवें पुत्र देवव्रत को उत्पन्न करके गङ्गादेवी स्वर्ग चली गई। महर्षि वसिष्ठ ने देवव्रत को चारों वेद पढ़ाये। जमदग्नि के पुत्र परशुराम ने उसे धनुर्विद्या सिखाई। रूप, शील, वीर्य, विद्या और ज्ञान में कुमार देवव्रत सारी पृथ्वी पर अनुपम था।

(b) जहां भक्तों का समागम होता है वहां ही भगवान् का प्रकाश होता है। भगवान् ने कहा— हे नारद, भक्त ही मेरे माता पिता हैं। भक्त के हृदय में मेरा जन्म होता है। भक्त का शुद्ध अन्तःकरण ही वसुदेव है, भक्ति देव-की है। शुद्ध अन्तःकरण से जब भक्ति का योग होता है तो मैं भक्त के हृदय में जन्म लेता हूँ। मैं वैकुण्ठ में नहीं रहता और न योगियों के हृदय में ही। जहां भक्त लोग मेरे नाम का कीर्तन करते हैं मैं वहां ही निवास करता हूँ।

Exercise XVII

(Punjab University, 1947.)

१ निम्नलिखितों में से चार का संस्कृत में अनुवाद करोः—

(क) सच बोलना, धर्मा-चरण करना, प्रति दिन स्वाध्याय करना, माता पिता और अतिथियों को देवता समझना मनुष्य का श्रेष्ठ कर्त्तव्य है।

(ख) हिन्दी तथा संस्कृत भाषाओं के प्रचार से ही भारत की उन्नति होगी। जो स्वदेशी वस्तुओं का व्यवहार नहीं करता वह देश का शत्रु है।

(ग) जैसे मनुष्य पुराने वस्त्र उतार कर नए वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार जीवात्मा पुराने शरीर त्याग कर नए शरीरों को ग्रहण करता है।

(घ) आज सायंकाल सात बजे शहर से बाहिर रावी नदी के किनारे पर एक भारी सभा होगी। आप लोग कृपया समय पर वहां पधारें।

(ङ) रामायण और महाभारत हिन्दुओं के परम पवित्र ग्रन्थ हैं। इन को पढ़े विना हिंदू सभ्यता का ज्ञान असम्भव है।

(च) गुणों से हीन को देख कर उस पर कृपा करो, उस का तिरस्कार न करो। गुणों से समान व्यक्ति को देख कर उस से मित्रता करो, मुकाबला (स्पर्धा) न करो।

(छ) इस विषय में तुम्हें बिल्कुल चिंता नहीं करनी चाहिये। भगवान् सब भला करेंगे। वे ही अनाथों के नाथ और दुःखों से रक्षाकरने वाले हैं।

२ केवल एक का संस्कृत में अनुवाद करो:—

(क) एक बार धर्म ने युधिष्ठिर की परीक्षा की। युधिष्ठिर स्वर्ग जाने के लिये प्रस्तुत थे। जब विमान पर बैठने लगे तो उन्हों ने अपने स्वामी भक्त कुत्ते की ओर देखा। कुत्ता आगे बढ़ा। विमान चलाने वालों ने कहा— "हम तो आप को स्वग में ले जाने के लिये आये हैं, वहां आप के कुत्ते के लिये कोई स्थान नहीं है"। युधिष्ठिर ने कहा, "जिस स्वग में मैं स्वामिभक्त कुत्ते को साथ नहीं ले जा सकता, मुझे उसकी आवश्यकता नहीं"। उस समय धर्म प्रकट हुआ और बोला, "तुम परीक्षा में पूरे उतरे; तुम ने स्वर्ग की अपेक्षा धम को श्रेष्ठ माना। तुम धन्य हो"!

(ख) कुछ ऋषियों ने राजर्षि जनक के पास जा कर पूछा— "महाराज! आप प्रजा पालन और योगसाधन का काम एक साथ (युगपत्) कैसे करते हैं? योगी लोग कहते हैं कि चित्त का संयम समाधि के विना नहीं होता। आप राजा हो कर किस प्रकार यह कठिन काम करते हैं"। राजा ने उत्तर दिया– "आप लोग ऋषि हैं, सब कुछ जानते हैं। दया करके जब मुझ से आप लोगों ने पूछा है, तब मैं जो जानता हूँ अवश्य कहूँगा। इस संसार में जो कुछ

आप लोग देख रहे हैं सब प्रभु परमेश्वर का ही है' इस में कुछ भी मेरा नहीं है, इस प्रकार विचार करके मैं काम करता हूँ। मैं सेवक मात्र हूं। प्रभु की जैसा इच्छा होती है वैसे ही चलता हूं। इसी भाव से उन का काम करता रहता हूँ"।

Exercise XVIII
(East Punjab University, 1948.)

(क) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत मे अनुवाद करो :—

१. सवेरा हो गया।
२. जागो भाई।
३. भगवान् का स्मरण करो।
४. विस्तरा छोड़ो।
५. मैदान जाओ।
६. हाथ मुंह धोओ।
७. दांतून- कुल्ला करो।
८. थोड़ा बहुत व्यायाम कर के स्नान करो।
९. सन्ध्या में बैठो।
१०. तुम्हारी माता तुम्हारे लिये कलेवा तयार कर रही है।
११. दस बजे तुम्हें स्कूल पहुंचना है।

(१२) इस से पूर्व तुम्हें अपना पाठ भी याद करना है।

(१३) आलस्य छोड़ो।

(१४) जरा फुर्तीले बनो।

(१५) देखो न तुम्हारा साथी राम कब से उठा हुआ है।

(१६ नित्य कर्म से निवृत्त हो कर अपने काम में जुटा हुआ है।